बीओआई

वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका

सितंबर, 2022

हरित धरती, हरित देश

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2021-2022

दिनांक 14 व 15 सितंबर 2022 को सूरत, गुजरात में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हिन्दी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा बैंक ऑफ़ इंडिया को वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय) प्रदान किया गया। इस अवसर माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय मिश्रा एवं राज्य सभा के माननीय उप सभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह से पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री स्वरूप दासगुप्ता।

सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व शृंखला के अंतर्गत 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी' पुस्तिका का विमोचन करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री स्वरूप दासगुप्ता

विषय-सूची

ग्रामीण और अर्धशहरी अर्थव्यवस्था को गति देते एमएसएमई उद्योग 06

बैंकों में अनुपालन प्रक्रिया 10

अर्थव्यवस्था और बैंकिंग क्षेत्र के बदलते परिदृश्य में हिन्दी भाषा की भूमिका 14

भारतवर्ष के ऐतिहासिक विश्वविद्यालय 18

नोबेल पुरस्कार 20

बंगाल की माँ दुर्गा: विश्व की एक सांस्कृतिक विरासत 23

"सुश्री विजिलेंट और मिस्टर प्रूडेंट का क्या कहना है" 25

संरक्षक

श्री स्वरूप दासगुप्ता
कार्यपालक निदेशक

प्रधान संपादक

श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी
महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

श्री शैलेश कुमार मालवीय
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक

श्री एस चंद्रशेखर, मुख्य प्रबंधक

श्री पुनीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक

श्री निरंजन कुमार सामरिया, वरिष्ठ प्रबंधक

डॉ. पीयूष राज, वरिष्ठ प्रबंधक

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों,

'बीओआई वार्ता' पत्रिका के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि हमारे बैंक को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार का सर्वोच्च 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। हमारे बैंक के संयोजन में कार्यरत रत्नागिरी नराकास को भी 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। हम सब के लिए यह भी प्रसन्नता का विषय है कि हाल ही में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा घोषित क्षेत्रीय पुरस्कारों में हमारे कई अंचलों और बैंक के संयोजन में कार्यरत नराकासों का नाम सम्मिलित है। निश्चित ही इससे हमारे बैंक की प्रतिष्ठा बढ़ी है। इन उपलब्धियों के लिए मैं बैंक ऑफ़ इंडिया परिवार के सभी स्टाफ सदस्यों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि हम सब अपना श्रेष्ठ निष्पादन जारी रखेंगे।

आप सभी अवगत है कि बैंकिंग उद्योग में अपने बैंक की स्थिति को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से व्यावसायिक निष्पादन में निरंतर वृद्धि के लिए हम सभी प्रयासरत हैं। भारत का बैंकिंग परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। वित्त के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के प्रयोग से बैंकिंग में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण चुनौतियां भी पैदा हुई हैं जिनमें 'अनुपालन' भी एक है। यह अनुपालन हमारी प्राथमिकता है। किसी भी बैंक के लिए अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि वह अपने ग्राहकों, निवेशकों और विनियामकों को श्रेष्ठ सेवा दे। बाजार में अपना हिस्सा बढ़ाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक भी है। मुझे विश्वास है कि आप सब अपने अपने स्तर पर बैंक की चहुँमुखी प्रगति के लिए अपना श्रेष्ठ योगदान देंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ!

भवदीय,

(स्वरूप दासगुप्ता)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियों,

विगत वर्ष के लिए हमारे बैंक को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हमारे बैंक के संयोजन में कार्यरत नराकास रत्नागिरी को भी राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अलावा विभिन्न अंचलों और हमारे बैंक के संयोजन में कार्यरत नराकास को भी भारत सरकार के क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। पुरस्कारों की ये प्राप्ति इस बात का द्योतक है कि हम अपने बैंक में राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन उत्साहपूर्वक कर रहे हैं। इस उत्साह के परिपूर्ण वातावरण के सृजन के लिए मैं आप सब के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

हाल ही में हमने द्वितीय तिमाही के परिणाम भी घोषित किए हैं जो उत्साहवर्धक हैं। आइए उत्साह के इस वातावरण से प्राप्त नव ऊर्जा का उपयोग हम अपनी अपनी शाखा के लिए करें । इससे बेहतर कारोबार की प्राप्ति और अनुपालन संबंधी अपेक्षाओं की पूर्ति सुनिश्चित होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ!

आपका,

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)

ग्रामीण और अर्धशहरी अर्थव्यवस्था को गति देते एमएसएमई उद्योग

मिलिंद श्रीवास्तव
प्रबंधक (सामान्य परिचालन विभाग)
राजकोट अंचल

वर्ष 1947 भारत देश की अंग्रेजों से स्वतंत्रता लेकर आया था। अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान एवं संग्राम ने सैंकड़ों वर्षों के आज़ाद भारत के स्वप्न को साकार कर दिखाया। सोने की चिड़िया, अब पिंजरे से निकल कर आज़ाद गगन में उड़ने को तैयार थी। 15 अगस्त रात्रि बारह बजे पंडित जवाहरलाल नेहरू के भाषण के साथ भारत इतिहास का गवाह बनने के बजाय पहली बार इतिहास लिख रहा था; और इतिहास भी ऐसा कि कभी न डूबने वाला सूर्य एक साबरमती के संत के प्रकाश से हार गया था। आज़ादी मिल चुकी थी, गरीब के अमीर के साथ कंधे से कंधा मिला कर खड़े होने की आज़ादी। अपना कपड़ा, अपना नमक, अपना अनाज, अपना साहित्य, अपना संविधान, अपना क़ानून बना लेने की आज़ादी। हर उस अत्याचार से आज़ादी जो अंग्रेजों ने हम पर किए। हर उस शोषण से आज़ादी जो हमने पिछले तीन सौ सालों से सहे। भारत अब एक था, विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय और संस्कृतियों के बीच 'विविधता' में एकता का देश, स्वावलम्बन का देश, आत्मनिर्भरता का देश।

हमारा भारत वर्ष 2022 में इसी स्वतंत्रता की उपलब्धि की 75वीं वर्षगाँठ मना रहा है और इसी सुनहरे अवसर पर "आज़ादी का अमृत महोत्सव" भारत की आत्मनिर्भरता की दिशा में उठाया गया एक अद्भुत एवं अनूठा कदम है। यह महोत्सव एक बहुआयामी त्यौहार के रूप में मनाया जा रहा है जिसमें भारत के यशस्वी इतिहास, अनेकानेक उपलब्धताएँ, विशिष्ट संस्कृति आदि का विभिन्न तरीक़ों से समारोह मनाया जा रहा है एवं भारत के स्वतंत्रता वर्ष का पुण्यस्मरण किया जा रहा है। इस पर्व के अंतर्गत एक ओर आज़ादी की लड़ाई में शहीद हुए स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी जा रही है, वही ऐसे लोगों का भी आभार प्रकट किया जा रहा है जिन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। भारत को डिजिटल पृष्ठभूमि में सफलता के पायदान पर खड़े होते देखा जा रहा है, तो दूसरी ओर अपने 'अहिंसा परमो धर्मः' के प्रेरणा मंत्र से विश्वगुरु बनने का सफ़र तय किया जा रहा है। इस महोत्सव में संगीत, नृत्य एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों से देश की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रम भी किए जा रहे हैं, साथ ही आयुष्मान भारत योजना को जन आरोग्य बेहतर करने से जोड़ा जा रहा है।

इसी परिप्रेक्ष्य में भारत के समग्र विकास में एमएसएमई उद्यमों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। 1961 में, लघु उद्योग मंत्रालय और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय को मिलाकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय का गठन किया गया था। एमएसएमई घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए कई तरह के उत्पादों का उत्पादन और निर्माण करते हैं। एमएसएमई संबंधित मंत्रालयों, राज्य सरकारों और स्टेकहोल्डर की मदद से खादी, ग्राम और कॉयर उद्योगों के विकास में भी मदद करते हैं। एमएसएमई यानी कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों ने सर्वदा ही भारत के विकास में एक अद्वितीय भूमिका निभाई है। भारत हमेशा से कृषि प्रधान देश रहा है लेकिन स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों द्वारा की गई अंधी लूट ने हमारे देश को भुखमरी के कगार पर ला खड़ा किया था। उस समय एक कमान हरित क्रांति ने और दूसरी कमान रोज़गार के अवसर प्रदान करने के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों ने पकड़ी। नवीन भारत में भी, आज आत्मनिर्भर भारत अभियान पर विशेष ज़ोर इसीलिए दिया जा रहा है क्योंकि यह क्षेत्र रोज़गार उपलब्ध कराने के साथ साथ देश को आर्थिक रणनीति की दृष्टि से भी सुदृढ़ बनाता है। ये कहना ग़लत नहीं होगा कि एमएसएमई भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

जहां तक ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों के विकास की बात है, एमएसएमई ने उद्यमिता को बढ़ावा देने के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोज़गारी की समस्या कम करने में सहायता भी की है। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा विभिन्न ऋण संबंधी

योजनाएँ एमएसएमई द्वारा ग्रामीण लोगों के विकास के लिए शुरू की गई हैं जिनमें मुख्य रूप से सीजीटीएमएसई, क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना, क्रेडिट गैरंटी योजना, मुद्रा योजना, प्रधान मंत्री रोज़गार सृजन कार्यक्रम, स्टैंड अप इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया आदि हैं।

एमएसएमई उद्यमों की मदद से ग्रामीण क्षेत्रों के कोने कोने में रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं। बैंकों की आसान ऋण योजनाओं द्वारा आर्थिक सहायता तुरंत प्राप्त की जा सकती है। विशिष्ट ट्रेनिंग सेंटर श्रमिकों के कौशल को निखारने का काम करते हैं। नवीनतम तकनीक से कम से कम समय में अधिकतम उत्पादन कर बेहतरीन उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। विभिन्न समर्पित संस्थाएँ भी क्रियान्वित की गई हैं सिर्फ़ एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए जैसे कि एस्पायर, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम संस्थान, राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम इत्यादि। सभी प्रकार के छोटे से छोटे ऋण में भी सब्सिडी और बिना कोलैटरल की मदद से आज हर व्यक्ति आत्मनिर्भर होने का स्वप्न साकार कर पा रहा है।

आँकड़ों की बात की जाए तो लगभग 10 लाख लोगों ने 2021-22 वित्तीय वर्ष में अपना उद्यम रजिस्ट्रेशन करवाया। जहां वर्ष 2011-12 में एमएसएमई उद्योग की कुल आय लगभग 26 लाख करोड़ रुपए थी, वहीं सिर्फ़ पाँच साल में कुल आय बढ़ कर 44 लाख करोड़ रुपए हो गई।

ग्रामीण क्षेत्रों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एमएसएमई मंत्रालय द्वारा कोविड काल में अनेक गाँवों एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में सैनिटाइजर, मास्क, गाउन, हॉस्पिटल फ़र्नीचर इत्यादि के उत्पादन के लिए विशेष अभियान चलाए गए। 'वोकल फ़ोर लोकल' की नई विचारधारा ने स्वदेशीकरण की प्रक्रिया को और तेज कर दिया है, जिससे ग्रामीण स्तर पर भारत की अर्थव्यवस्था के मज़बूत होने के संकेत मिल रहे हैं। एमएसएमई का प्रयास है कि ग्रामीण और शहरी युवाओं को अपने क्षेत्र में रोज़गार के अवसर प्राप्त हों ताकि कौशल शक्ति से युक्त युवाओं का पलायन रुक सके और ग्रामीण भारत का भी औद्योगिक एवं उद्यमीय विकास समावेशी रूप से हो सके। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006 के तहत भारत सरकार ने एमएसएमई के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की जांच के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम के लिए राष्ट्रीय बोर्ड की स्थापना की। यह बोर्ड एमएसएमई क्षेत्र के विकास के लिए मौज़ूदा नीतियों की समीक्षा करता है यानी कि पता लगाता है कि योजना में क्या कमी है और कहां सुधार की ज़रूरत है और सरकार को सुझाव देता है।

केंद्र सरकार में न सिर्फ़ एमएसएमई मंत्रालय बल्कि कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, इस्पात मंत्रालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय, अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय सहित अनेक मंत्रालय एवं विभाग एमएसएमई की कोई ना कोई योजना संचालित कर रहे हैं जिनसे भारतीय युवाओं का मार्गदर्शन हो रहा है। दिसंबर 2020 में तत्कालीन केन्द्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री नितिन गडकरी ने कहा था- "वर्तमान उद्योग मूल रूप से शहरी क्षेत्रों में केन्द्रित हैं। हमें इस दिशा में बदलाव करने का प्रयास करना चाहिए और ग्रामीण क्षेत्रों तक भी उद्योगों को पहुंचाना चाहिए। हमें ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में भी रोज़गार के अवसर तलाशने चाहिए। इस दिशा में वित्तीय संस्थानों की अहम भूमिका होगी। इन क्षेत्रों में उद्योगों को स्थापित करने के लिए पूँजी की ज़रूरत होगी। इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए एक ठोस वित्तीय मॉडल को विकसित करने की ज़रूरत है। इससे इंडिया और भारत के बीच मौजूद खाई को पाटने में मदद मिलेगी।"

एमएसएमई की विभिन्न योजनाओं में, जो प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण युवाओं से जुड़ी हैं, सबसे महत्वपूर्ण है प्रधानमंत्री रोज़गार सृजन कार्यक्रम। इसका उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोज़गार के नए उपक्रम या परियोजना अथवा स्वस्थ उद्यमों की स्थापना के माध्यम से रोज़गार के अवसरों का निर्माण करना है। इस योजना में विनिर्माण क्षेत्र के मामले में किसी इकाई या परियोजना की अधिकतम लागत में 25 लाख रुपए और व्यवसाय अथवा सेवा क्षेत्र के मामले में अधिकतम 10 लाख रुपए की मदद दी जाती है। इस योजना से भारत में अभी तक लाखों युवा लाभ उठा चुके हैं। देश का कोई भी व्यक्ति जो 18 वर्ष से अधिक की आयु का है और जिसने कम से कम 8वीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली है, वह इस योजना का लाभ उठा सकता है। दूसरी महत्वपूर्ण योजना है प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना जो कुशल ग्रामीण युवाओं की नई फ़ौज तैयार कर रही है और स्टैंडअप इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसी अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं

को देश में साकार कर भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अब भविष्य को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में जो कार्यक्रम तय किया गया है वो अपने आप में देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने के लिए काफ़ी है। सर्वप्रथम आवश्यक योजना है गाँवों में डिजिटल मार्केट का विकास करना। हाल के वर्षों में भारतीय डिजिटल बाज़ार में हुई प्रगति के बीच गाँवों में डिजिटल व्यवहार को बढ़ावा देने से अंतरराष्ट्रीय पूँजी में ग्रामीण भागीदारी होने से नए अवसर खुलते चले जाएँगे। इसके अतिरिक्त अन्य वित्तीय बिचौलिये भी किसी प्रकार से सक्रिय नहीं रह पाएँगे। दूसरी ओर डेटा अर्थव्यवस्था के बढ़ते महत्व को देखते हुए यह बहुत ही आवश्यक हो गया है कि सरकार द्वारा एक स्वतंत्र निकाय की स्थापना की जाए जो ग्रामीण व्यापारियों को परामर्श देने के साथ उन्हें इस नई डिजिटल व्यवस्था में आगे बढ़ने में सक्षम बना सके और डिजिटल धोखाधड़ियों से बचा सके।

श्रम क़ानूनों में सुधार एक बहुत ज़रूरी पहलू है। ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले शोषण की सम्भावना को देखते हुए एवं एमएसएमई की संवेदनशीलता को देखते हुए इन क़ानूनों को एमएसएमई के लिए विकास-उन्मुख ढाँचा प्रदान करने और श्रमिकों के अधिकारों के संदर्भ में पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने के बीच सही संतुलन स्थापित करना होगा।

इसके अलावा, लॉकडाउन के दौरान व्यापार में अचानक होने वाली तीव्र गिरावट ने एमएसएमई क्षेत्र को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। भारत के शीर्ष निर्यात जिनमें श्रम गहन उत्पाद यथा रत्न और आभूषण से लेकर वस्त्र / परिधान या समुद्री भोजन तक शामिल हैं, मुख्य रूप से एमएसएमई क्षेत्र द्वारा आपूर्ति किए जाते हैं। इसी तरह, लॉकडाउन ने कच्चे माल के आयात को प्रभावित किया जिसने एमएसएमई क्षेत्र की आपूर्ति श्रृंखला को बाधित किया। सुदूर क्षेत्रों में एमएसएमई को बाधित आपूर्ति श्रृंखला प्रणाली और अंतर्राज्यीय लॉकडाउन प्रावधानों के कारण बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हालाँकि, आवश्यक वस्तुओं का व्यवसाय करने वाले उद्यमियों को व्यवधानों का सामना करना पड़ा, पर इनकी पूर्वानुमानित नकदी प्रवाह की स्थिति बेहतर थी। कुछ उद्यमों ने गैर-आवश्यक वस्तुओं की ओर से आवश्यक वस्तुओं की ओर ध्यान केंद्रित करके अपने व्यवसाय में मौलिक परिवर्तन जैसे कि हैंड सैनिटाइजर और प्रसाधनों का उत्पादन, पीपीई किट, पुन: प्रयोज्य मास्क आदि का उत्पादन करके इस कठिन समय का सामना किया। महामारी के समय ने एमएसएमई क्षेत्र के डिजिटलीकरण को भी बढ़ाया है। अधिकांश व्यवसाय डिजिटल हो रहे हैं। वे एक वेबसाइट शुरू करके या ई-कॉमर्स पर व्यवसाय संबंधी अपने प्रस्ताव देकर व्यवसाय का विस्तार कर रहे हैं।

हाल के वर्षों में सरकार द्वारा व्यापार सुगमता पर विशेष ज़ोर दिया गया है परंतु इसी दौरान गाँवों में मौजूद छोटे व्यवसायों के लिए रिपोर्टिंग, अनुमोदन और अनुपालन आवश्यकता आदि जटिलताएँ बनी हुई हैं। यदि हम सही मायने में चाहते हैं कि ग्रामीण एमएसएमई का देश के आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान हो तो इसके लिए एमएसएमई के लिए वर्तमान जटिलताओं से मुक्त एक ऐसा नियामक ढाँचा प्रदान किया जाना बहुत ही आवश्यक है जो उनके ख़िलाफ़ काम करने की बजाए उनके लिए काम करता हो।

इसका एक दूसरा पहलू यह भी है कि इसमें सर्विस सेक्टर उद्योग भी शामिल है। 'सर्विस' शब्द का हिंदी अर्थ 'सेवा' होता है। जब कोई व्यक्ति किसी का काम करने के बदले कोई रक़म मेहनताने के रूप में लेता है तो उसे सर्विस उद्योग कहते हैं। एमएसएमई उद्योग के तहत सर्विस उद्योग की बात करें तो इसमें ट्रैवल एजेन्सी चलाने से लेकर रेस्टौरेंट चलाने, कर्मचारी उपलब्ध कराने तक का व्यापार सर्विस सेक्टर के रूप में जाना जाता है। इसे उदाहरण के तौर पर देखना हो तो इसे इस तरह समझ सकते हैं कि जब ब्रेड बनाने वाली फ़ैक्टरी ब्रेड का निर्माण कर लेती है और ब्रेड की पैकिंग हो जाती है तो अब ब्रेड को मार्केट में भेजने की हर छोटी से छोटी प्रक्रिया को सर्विस सेक्टर में शामिल किया जाएगा।

मुख्य रूप से निम्नलिखित काम गाँवों में एमएसएमई क्षेत्र में आते हैं-

- घर में इस्तेमाल किया जाने वाला कूलर बनाना
- फ़ैन्सी ज्वैलरी बनाना
- डिस्पोज़बल कप प्लेट बनाना
- बर्तन बनाना
- अस्पताल में काम आने वाली चीज़ें बनाना
- बिजली के उपकरण बनाना
- गाड़ी के उपकरण बनाना
- कपड़े के बैग बनाना

- बटुआ बनाना
- हर्बल सामान जैसे साबुन तेल आदि बनाना
- मसाले बनाने का काम करना
- खाद्य पदार्थ बनाना
- मोमबत्ती या अगरबत्ती बनाना
- कांटेदार तार बनाना
- टोकरी बनाना
- चप्पल जूते बनाना
- बैग बनाना
- पारम्परिक औषधियाँ बनाना
- पेपर बैग और लिफ़ाफ़े बनाना

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के मज़बूत आर्थिक भविष्य के लिए एमएसएमई को प्राथमिकता देना बहुत आवश्यक है। भारत के गाँवों में जहां आज भी समाज और अर्थशास्त्र की मिली जुली आत्मा बसती है, वहाँ ऐसे ही और उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। अगला दशक भारत को एक उभरती हुई शक्ति से आगे बढ़ते हुए एक स्थापित महाशक्ति के रूप में बदलने का दशक होगा और इस यात्रा में ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में एमएसएमई सेक्टर की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी। ध्यान रहे कि गांधी जी का भी यही मानना था कि सच्चे अर्थों में यदि देश का सर्वांगीण विकास करना है तो हमें लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना होगा। गाँधी जी का मानना था कि भारत के पास बड़ी संख्या में श्रमशक्ति मौजूद है, उसको रोजगार देने और उसका प्रभावी उपयोग करने में लघु उद्योग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । गाँधी की चिंता के केंद्र में मुख्य रूप से भारत के गाँव ही थे, जिनके लिए उन्होंने ग्राम-स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें गाँव की हर छोटी बड़ी आवश्यकताओं को गाँव आधारित अर्थव्यवस्था के अंतर्गत ही पूरा किया जा सकता था । आज भी हम देखें तो हमारे गाँवों और छोटे शहरों में अपार सम्भावनाएं विद्यमान हैं । एमएसएमई के माध्यम से न सिर्फ पलायन रुकेगा, बल्कि लोगों को उनके घर के आसपास ही रोजगार भी मिलेगा। अभी भारत की बड़ी आबादी बड़े शहरों की ओर अग्रसर होती जा रही है जिससे शहरों पर दबाव बढ़ता जा रहा है और उद्योगों का केन्द्रीकरण होता चला जा रहा है जबकि वर्तमान समय की माँग विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था है जिससे देश के सभी भागों का पर्याप्त विकास हो सके। ग्रामीण उद्यमिता के ज़रिए ग्रामीण इलाकों में सामाजिक-आर्थिक बदलाव का मार्ग प्रशस्त होता है। यहां यह भी बताना जरूरी है कि ग्रामीण उद्यमिता को अलग-थलग तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इस पर पूरे ग्रामीण समुदाय को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालिक नजरिए से विचार किया जाना चाहिए। ग्रामीण उद्यमिता न सिर्फ लोगों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि इससे ग्रामीण समुदायों का जीवन-स्तर भी बेहतर होता है और दूरदराज के इलाकों में भी समृद्धि देखने को मिलती है। साथ ही, यह समावेशी विकास के लिए भी गुंजाइश बनाती है। ग्रामीण उद्यमों का वजूद कायम रहे, इसके लिए नीतिगत स्तर पर असरदार ढंग से पहल करने की जरूरत है। इसके तहत गांव के लोगों के लिए उद्यमिता संबंधी माहौल तैयार करना, बाजार के साधनों को बढ़ावा देना, ब्रांड को अहम बनाने के लिए प्रयास करना आदि शामिल हैं।

हिंदी की गाथा

अनपढ़ से ज्ञानी बनाती है हिन्दी,
'अ' से अनार तो 'ज्ञ' से ज्ञानी बनाती है हिन्दी।
पहला ही अक्षर है रस से भरा,
जीवन को सरस बनाती है हिन्दी।
भाषा हो चाहे कोई तुम्हारी,
दर्द में निकलता 'माँ' वह शब्द भी है हिन्दी।
समस्त देश को एक सूत्र में बांधती है हिन्दी,
भाईचारा - समता - एकता की डोर है हिन्दी।
हिन्दी भाषाओं की बिंदी,
भाषाओं का श्रृंगार है हिन्दी।
धर्मग्रंथ हो चाहे कोई,
सरल, सरस बनाती है हिन्दी।
पालक, पोषक, रक्षक हिन्दी,
अनपढ़ से ज्ञानी बनाती है हिन्दी।

उषा
प्रबंधक
मोगप्पेर शाखा
चेन्नई अंचल

बैंकों में अनुपालन प्रक्रिया

अमित कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय
जयपुर अंचल

जुर्माने से बचना है तो करना होगा अनुपालन
बैंक की साख बनानी है तो करना होगा अनुपालन।

बैंकों को जिन मसलों का सामना करना पड़ रहा है, उसको देखते हुए हर बैंक में अनुपालन और जोखिम प्रबंधन के लिये विशेष कैडर सृजित करने की जरूरत है।

अनुपालन कार्य : कर्तव्य और उत्तरदायित्व

अनुपालन कार्य, बैंक को अपने अनुपालन जोखिम को प्रबंधित करने में मदद करने के लिए होते हैं जिसे कानूनी या नियामक प्रतिबंधों के जोखिम, वित्तीय नुकसान या बैंक की साख के नुकसान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो सभी लागू कानूनों, नियम, आचार संहिता और अच्छे अभ्यास के मानक (एक साथ, "कानून, नियम और मानक") को पूरा करने में असफल होने के परिणामस्वरूप हो सकता है। अनुपालन जोखिम को कभी-कभी प्रामाणिकता जोखिम के रूप में भी पेश किया जाता है क्योंकि बैंक की साख अखंडता और उचित व्यवहार के सिद्धांतों के पालन के साथ निकटता से जुड़ी हुई है। बैंकिंग पर्यवेक्षकों को तभी संतुष्ट होना चाहिए जब प्रभावी अनुपालन नीतियों और प्रक्रियाओं का पालन किया जाता हो और कानूनों, नियमों और मानकों के उल्लंघनों की पहचान होने पर प्रबंधित उचित सुधारात्मक कार्रवाई की जाती हो।

वर्तमान समय में भारत का बैंकिंग परिदृश्य बहुत तेजी से बदल रहा है। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ पूरे बैंकिंग उद्योग में बड़े पैमाने पर परिवर्तन आया है जिसने वित्तीय प्रक्रियाओं और वित्तीय संस्थानों के संचालन करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। वित्त और प्रौद्योगिकी के बीच सहयोग से बैंकिंग के कई पहलुओं में परिवर्तन आया है। वित्तीय प्रौद्योगिकी को एक ऐसी शक्ति कहा जा रहा है जिसमें भविष्य में वित्तीय क्षेत्र, व्यापार मॉडल और बैंकिंग संरचनाओं को फिर से नया आकार देने की पूरी क्षमता है। इस परिवर्तन ने बैंकों के साथ-साथ नियामकों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश की हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है अनुपालन जो किसी भी बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है।

अनुपालन को कानूनों, नियमों और विनियमों सहित विभिन्न आचार संहिताओं के रूप में परिभाषित किया गया है। हालांकि इनमें से अधिकांश बाहरी आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं। संस्था को अपने आंतरिक नियमों, नीतियों और प्रक्रियाओं का पालन करते हुए, नैतिक प्रथाओं के अनुसार कार्य करना चाहिए। एक मजबूत अनुपालन संस्कृति को नियमों का पालन करने के साथ उचित व्यवहार संहिताओं का पालन भी सुनिश्चित करना चाहिए और साथ ही कुशल ग्राहक सेवा प्रदान करते हुए ग्राहकों के साथ उचित व्यवहार भी करना चाहिए। अगर इस तरह से अनुपालन को अपनाया जाएगा तो निश्चित रूप से अनुपालन कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं होगा।

अनुपालन के फायदे:

बैंकों के लिए अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने और ग्राहकों, निवेशकों और विनियामकों का विश्वास जीतने के लिए एक अच्छी अनुपालन संस्कृति का कार्यनिष्पादन बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक अच्छी अनुपालन संस्कृति बैंकों को निम्नलिखित तरीकों से लाभान्वित कर सकती है-

1 निम्न संगठनात्मक और व्यक्तिगत जोखिम
2 कम प्रतिष्ठित जोखिम
3 अपना काम करते समय कर्मचारियों में कम झिझक और अधिक आत्मविश्वास का होना
4 प्रतिभा को आकर्षित करना एवं बनाए रखने में मदद करना और संस्था से कर्मचारी का जुड़ाव सुनिश्चित करना।
5 बेहतर पारदर्शिता की वजह से बेहतर निर्णय लेने में कर्मचारी को सक्षम बनाना।
6 नियामकों और अन्य हितधारकों के साथ बेहतर संबंध बनाना।
7 निवेशकों के बीच संस्था के मूल्यांकन में वृद्धि होना।

इसलिए यदि हम ग्राहकों की संतुष्टि चाहते हैं तो हमें अनुपालन को अपनाने की आवश्यकता है जो संस्था को शेयर पूँजी पर बेहतर प्रतिफल की ओर ले जा सकती है।

अनुपालन नहीं करने के नुकसान:

वित्तीय संस्थानों द्वारा अनुपालन नहीं करने के कारण इन्हें बहुत से नुकसान उठाने पड़ते हैं। कई नुकसान प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं और कई अप्रत्यक्ष रूप से होते हैं। अनुपालन जोखिम किसी बैंक को कानूनों, विनियमों, नियमों, संबंधित स्व-नियामक संगठन मानकों और लागू आचार संहिता का पालन करने में विफलता के परिणामस्वरूप भुगतना पड़ सकता है।

अनुपालन जोखिम को कम करने के लिए नीचे दिये गए तरीके अपनाए जा सकते हैं-

1 प्रक्रियाओं और इससे संबन्धित जरूरत को 'क्या करें और क्या न करें' की सूची के साथ ठीक से प्रलेखित किया जाना चाहिए ताकि भविष्य में होने वाली गलतियों से बचा जा सके।
2 उचित आचरण का पालन करने में विफलता के उदाहरणों को केस स्टडी में परिवर्तित कर कर्मचारियों के बीच शिक्षा और वांछित दृष्टिकोण के लिए प्रचारित किया जाना चाहिए।
3 बैंकों द्वारा अनुपालन को केवल लागत के रूप में मानने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।

इस प्रकार के प्रयोग से न सिर्फ बैंकों की कार्यशैली में सुधार होगा अपितु अप्रत्यक्ष रूप से बैंक की आय में भी वृद्धि होगी जिसे अधिकांश बैंक निर्धारित नहीं करते हैं, जबकि खराब अनुपालन प्रक्रिया के कारण बैंकों को भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

विश्व स्तर पर अगर देखा जाए तो अब तक वित्तीय संकट की शुरुआत से 2020 तक बैंकों पर 400 बिलियन अमेरिकी डॉलर से ऊपर जुर्माना लगने की उम्मीद है। यदि केवल भारत के वित्तीय संस्थाओं के परिदृश्य को देखें तो जून 2018 से जुलाई 2019 तक रिज़र्व बैंक ने भारत में काम कर रहे विभिन्न वाणिज्यिक बैंकों पर अनुपालन नहीं करने के कारण 76 मौकों पर रू. 122.9 करोड़ का मौद्रिक दंड लगाया है जिसका प्रभाव निश्चित रूप से उनकी लाभप्रदता पर पड़ता है और बाज़ार में उनकी साख भी कम होती है।

हालांकि, जुर्माना और जुर्माने का डर, विनियमों की उभरती हुई प्रकृति के साथ बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं होगा लेकिन अंतर्निहित नियंत्रण के साथ ही वित्तीय प्रबंधन प्रणाली अनुपालन को दैनिक रूप से अपना सकती है। अनुपालन का नियमित प्रयोग संस्था को अधिक दक्ष, नियोजित तरीके से संचालित करने में सक्षम बनाता है। इसके साथ ही, सुदृढ़ शासन, कानून की अनुपालना, अखंडता, विश्वास और सम्मान के मूल्यों के लिए अनुकूल वातावरण भी बनाता है। अनुपालन के प्रयोग द्वारा बैंक स्वयं को विकसित होने वाले नियमों और व्यावसायिक चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक लचीलेपन को बनाए रखते हुए जिम्मेदारी के साथ काम करने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

अनुपालन संस्कृति - भारतीय परिदृश्य:

भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों में धोखाधड़ी और कदाचार संबंधी समिति (घोष समिति) की सिफारिशों के आधार पर अगस्त 1992 में बैंकों में "अनुपालन अधिकारी" की नियुक्ति की एक प्रणाली शुरू की थी।

अनुपालन अधिकारियों की भूमिका 1995 से अधिक ध्यान में तब आई जब लेखा परीक्षा और निरीक्षण विभाग के प्रभारी

महाप्रबंधक को अनुपालन कार्यों के लिए जिम्मेदार बनाया गया, जिसमें प्रबंध निदेशक को सीधे अनुपालन कार्यो पर आवधिक रिपोर्टिंग या प्रमाणन की आवश्यकता होती थी। यह धीरे-धीरे स्वीकार किया गया कि बैंकों में अनुपालन कार्यों की परिधि को न सिर्फ बढ़ाया जाना चाहिए बल्कि स्पष्ट रूप से परिभाषित भी किया जाना चाहिए।

इस संदर्भ में भारतीय बैंकों की अनुपालन संस्कृति को मजबूत करने की आवश्यकता है। पर्यवेक्षी प्रक्रिया के दौरान, रिज़र्व बैंक ने भारतीय बैंकों की अनुपालन संस्कृति में विभिन्न कमियों को देखा है। बैंक प्रबंधन द्वारा सुधार किए जाने के बावजूद कुछ कमियां और अनियमितताएं बार-बार देखी गई हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि धोखाधड़ी के कारण बैंकों को होने वाले कुछ बड़े नुकसानों से बचाया जा सकता था यदि संबंधित बैंकों में एक अच्छी अनुपालन प्रक्रिया निहित होती। धोखाधड़ी के ज्यादातर मामले संबंधित कर्मचारियों द्वारा आंतरिक नीतियों और प्रक्रियाओं का पालन न करने की वजह से होते हैं। बैंकों में धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाएं, इसमें शामिल राशियों की मात्रा और अपनाये गये तौर-तरीकों की जटिलताएं बैंकों में एक मजबूत अनुपालन संस्कृति के महत्व को उजागर करती हैं।

साइबर सुरक्षा से संबंधित अनुपालन जोखिम:

प्रौद्योगिकी संचालित बैंकिंग व्यवस्था में साइबर सुरक्षा संबंधी दिशानिर्देशों के अनुपालन का महत्व बहुत बढ़ गया है। साइबर लचीलेपन ढांचे का उद्देश्य तीन व्यापक मुद्दों को संबोधित करना है।

गोपनीयता भंग - अगर साइबर सुरक्षा का अनुपालन नहीं किया गया तो बैंक के गोपनीय डेटा के चोरी होने की संभावना बढ़ जाती है।

उपलब्धता भंग - कई बार अनुपालन नहीं होने के कारण इस तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं जैसे कि सिस्टम तो बरकरार है लेकिन सेवाएं अनुपलब्ध हैं।

अखंडता उल्लंघन - डेटा या सिस्टम का भ्रष्टाचार, सूचना की अखंडता और प्रसंस्करण के तरीके को प्रभावित करता है।

इन उल्लंघनों से संबंधित अनुपालन जोखिम का महत्व बहुत ही बढ़ जाता है और बैंकिंग संस्थाओं द्वारा प्राथमिकता के आधार पर इसे अपनाने की आवश्यकता है।

अनुपालन संस्कृति की न्यूनतम पर्यवेक्षी अपेक्षाएँ:

किसी भी संस्था में अनुपालन शीर्ष स्तर से शुरू होता है, यदि वित्तीय संस्थानों का शीर्ष नेतृत्व अनुपालन को लेकर गंभीर है तो निश्चित रूप से इसका असर निचले पायदान पर कार्य करने वाले कर्मचारी पर भी पड़ता है। अनुपालन, संस्था की संस्कृति का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। यह केवल अनुपालन कार्य में कार्यरत कर्मचारियों की ही जिम्मेदारी नहीं, बल्कि बैंक के प्रत्येक स्टाफ सदस्य की जिम्मेदारी होनी चाहिए और बैंक की व्यावसायिक इकाई किसी भी गैर-अनुपालन के लिए समान रूप से जिम्मेदार होनी चाहिए। एक बैंकर को व्यवसाय करते समय खुद को उच्च मानकों पर रखना चाहिए।

अपने शेयरधारकों, ग्राहकों, कर्मचारियों का विश्वास प्राप्त करने के लिए प्रभावी अनुपालन संस्कृति एक आवश्यकता बन गई है। यदि हम इस पर गहराई से विचार करें, तो एक मजबूत अनुपालन संस्कृति में निम्नलिखित आवश्यक तत्व होने चाहिए।

1. **जवाबदेही :** अनुपालन जोखिम कम से कम हो, इसकी ज़िम्मेदारी बैंक के वरिष्ठ प्रबंधन की होनी चाहिए। बोर्ड द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से जिम्मेदारी लेने की संस्कृति को विकसित करना, वरिष्ठ प्रबंधन, कार्यात्मक प्रमुख और परिचालन प्रमुख की जवाबदेही का स्पष्ट सीमांकन करना, व्यावसायिक इकाई की भूमिका को परिभाषित करना और आंतरिक लेखा परीक्षा की भूमिका मजबूत बनाना अनुपालन संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग हैं तथा इसे और प्रभावी बनाया जाना चाहिए।
2. **संप्रेषण :** सभी स्टाफ सदस्यों के लिए सामान्य मानकों और नियमों के बीच अंतर कर स्पष्टता और पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रभावी अनुपालन संस्कृति के लिए पूरे बैंक में जोखिम और अनुपालन को बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों के लिए अनुपालन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए और इस प्रक्रिया में आचरण से संबन्धित जोखिम और व्हिसल ब्लोअर तंत्र को भी मजबूत करना चाहिए।
3. **प्रोत्साहन संरचना:** संस्था में वांछित अनुपालन संस्कृति को प्राप्त करने के लिए बैंकों के निर्णय लेने की प्रणाली और प्रक्रियाओं में एक पर्याप्त प्रोत्साहन संरचना अंतर्निहित होनी चाहिए जिससे लोगों में अनुपालन संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रेरणा पैदा हो।
4. **भविष्योन्मुखी संरचना:** अनुपालन, अन्य कार्यों जैसे

कि जोखिम प्रबंधन और आंतरिक लेखा परीक्षा से पूर्णत: अलग है। अनुपालन कार्य का फोकस मुख्य रूप से निवारक अनुपालन पर होना चाहिए। निवारक अनुपालन बैंक की गतिविधियों का पहले से आकलन करेगा और गैर-अनुपालन गतिविधि/लेनदेन होने से पूर्व ही रोकेगा।

5. **अनुपालन संगठन, प्राधिकरण और संसाधन:** बैंक को अपने अनुपालन जोखिम के प्रबंधन के लिए प्राथमिकताएं इस तरह से निर्धारित करनी चाहिए जो उसकी अपनी जोखिम प्रबंधन रणनीति और संरचनाओं के अनुरूप हो। कुछ वित्तीय संस्थाओं में अनुपालन और परिचालन जोखिम कार्य अलग-अलग करना पसंद करते हैं लेकिन अनुपालन मामलों पर दो कार्यों के बीच पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता वाले तंत्र का विकास करना चाहिए। इसकी जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए और इसकी गतिविधियां आंतरिक लेखापरीक्षा द्वारा आवधिक और स्वतंत्र समीक्षा के अधीन होनी चाहिए। प्रबंधन को अनुपालन कार्य की स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए और उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

कॉर्पोरेट प्रशासन का महत्व: मजबूत अनुपालन संस्कृति के लिए वित्तीय संस्थाओं में फीडबैक तंत्र महत्वपूर्ण होता हैं। बैंक बोर्ड को प्रत्येक बैंक के आकार, जटिलता, जोखिम लेने की क्षमता, व्यवसाय मॉडल और दर्शन के अनुसार नीतियां अपनानी चाहिए। बोर्ड द्वारा अनुमोदित नीतियों को इकाई विशिष्ट अनियमितताओं पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही, नीतियों के प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन करने पर जोर देना चाहिए।

निष्कर्ष: अगर हम पूर्ववत अनुभवों का विश्लेषण करें तो यह पाते हैं कि बैंकों में अनुपालन प्रक्रिया में सुधार करने की आवश्यकता है। भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार यह बैंक के सुरक्षित भविष्य और सुदृढ़ कामकाज के लिए आवश्यक तत्व है और यदि इसका प्रभावी ढंग से पालन नहीं किया जाता है, तो यह बैंक के जोखिम प्रोफाइल पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। अनुपालन को दुनियाभर की वित्तीय संस्थाएं बहुत ही गंभीरता से ले रही हैं और व्यापक रूप से इस ओर ध्यान आकृष्ट कर रही हैं। नियामकों, पर्यवेक्षकों और अंतरराष्ट्रीय मानक निर्धारणकर्ता आदि इस तथ्य से वाकिफ हो चुके हैं कि केवल नियम बनाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि जब तक उनका अनुपालन विनियमित संस्थाओं द्वारा अक्षरश: नहीं किया जाता है तब तक वित्तीय संस्थाओं को अनुपालन न होने के कारण हानि से नहीं बचाया जा सकता है।

बैंक ऑफ़ इंडिया ने भी हाल ही मे कम्प्लायंस कल्चर को मजबूत बनाने के लिए Cermo+NXT एक नया पोर्टल शुरू किया है।

अर्थव्यवस्था और बैंकिंग क्षेत्र के बदलते परिदृश्य में हिन्दी भाषा की भूमिका

विकास चन्द्र झा
अधिकारी
बोकारो स्टील सिटी शाखा,
बोकारो अंचल

काल के कपाल पर मनुष्य ने अपने इतिहास को अनूठे रूप में अंकित किया है। इतिहास के इन्हीं पन्नों से हमें विदित होता है कि विश्व अर्थव्यवस्था में ईस्वी सन् 1 से 18वीं शताब्दी के बीच भारत व चीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ थीं। इस कालखण्ड में विश्व की इन दोनों ही अर्थव्यवस्थाओं ने अपनी-अपनी भाषाओं का उपयोग कर अपने समाज व देश को गौरवान्वित किया।

भारत के परिप्रेक्ष्य में इतिहास के पन्नों को उलटने से हमें यह ज्ञात होता है कि भारत का आर्थिक विकास सिंधु घाटी सभ्यता से आरम्भ हुआ। उस समय की अर्थव्यवस्था मुख्यत: जल यातायात पर आधारित थी। लगभग 600 ईस्वी पूर्व में महाजनपदों ने सिक्कों को ढालना आरम्भ कर दिया था। इस कालखण्ड को व्यापार के "स्वर्णिम युग" के रूप में चिह्नित किया गया है। शनै: शनै: भारतीय अर्थव्यवस्था विकास के अर्श पर विराजमान हो गई।

आर्थिक इतिहासकार अंगस मेडीसन की पुस्तक 'द वर्ल्ड इकॉनमी ए मिलेयनियल पर्सपेक्टिव' (विश्व अर्थव्यवस्था : एक हज़ार वर्ष का परिप्रेक्ष्य) के अनुसार भारत विश्व का सबसे सम्पन्न देश था तथा 17 वीं सदी तक भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।

इतिहास के इन पन्नों से हमें यह भी सीखने को मिलता है कि व्यवस्था चाहे अर्थ की हो या किसी और तंत्र की उस पर किसी एक भाषा का एकाधिकार तो नहीं ही है, बल्कि आम जन की भाषा का प्रयोग श्रेयस्कर है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भाषा के सम्बन्ध में अपने उद्गार व्यक्त किये :

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"

अर्थात अपनी भाषा में ही अपना विकास परिभाषित है।

अर्थव्यवस्था और समाज : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसे अपने जीवनयापन के लिये विभिन्न प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है। मानव मूल्यों के सृजन व संवर्धन के लिये मनुष्य पुरातन काल से ही समाज की परिकल्पना व सृजन में क्रमश: अग्रसर रहा है। इसे अपने क्रमिक विकास में यह भली भाँति ज्ञात हो गया कि "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता" अर्थात एक मनुष्य सारे काम सम्पन्न नहीं कर सकता तथा हर मनुष्य हर कार्य को समान कुशलता से नहीं कर सकता, उसे इसके लिये दूसरों की सहायता की जरूरत होगी। मनुष्य के बीच कार्यों का विभाजन उनके ज्ञान, कौशल, स्थान, प्रकृति आदि चीजों का ध्यान रखकर करना होगा।

मनुष्य के बीच की गयी व्यवस्थाओं में "उचित पारितोषिक" की व्यवस्था उनकी मूलभूत आवश्यकता है। मानव के जीवनयापन और विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उसे क्रय-विक्रय व अर्थतंत्र में सभी चीजों को अर्थरूप में परिवर्तन करने की जरूरत पड़ी।

मानव जीवन में मनुष्य के गर्भकाल से मृत्यु शय्या तक विभिन्न चरणों में उसे अर्थपूर्ण जीवन के लिए अर्थ की परम आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति विभिन्न स्त्रोतों के द्वारा स्वयं, परिवार, समाज और सरकार करती है। इस अर्थ के चक्र की रक्षा व संचालन के लिए उचित आधार की जरूरत पड़ती है जिसे काफी हद तक बैंकों ने समायोजित किया है।

अर्थव्यवस्था व बैंक : पुरातनकाल से ही मनुष्य क्रय-विक्रय के लिए विभिन्न व्यवस्थाओं का उपयोग करता रहा है। धीरे-धीरे उसे यह ज्ञात हो गया कि हमें ऐसी व्यवस्था अपनानी होगी जो आसानी से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति तो करे साथ ही सुरक्षित भी हो। जैसे "स्वर्ण" एक मूल्यवान धातु है किंतु हम इसे दैनिक उपयोग जैसे भोजन, वस्त्र, आवास आदि खरीदने के लिए आसानी से उपयोग नहीं कर सकते तथा इसकी सुरक्षा भी दुष्कर है।

इन्हीं आधारों को ध्यान में रखकर मनुष्य ने मुद्राओं का

उपयोग किया तथा यह मुद्रा अलग-अलग कालखण्ड व भूखण्ड के हिसाब से परिवर्तनशील रही है, और आज ये आपस में भी परिवर्तनशील है। इन मुद्राओं के उपयोग से एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से, एक प्रदेश दूसरे प्रदेश से तथा एक देश दूसरे देश से आपस में व्यापार आदि माध्यमों से आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं।

इस व्यवस्था के संचालन के लिए बैंकों का विकास हुआ जहाँ हम अपने बचत का सुरक्षित निवेश कर सके तथा आवश्यकता पड़ने पर ऋण के माध्यम से आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। विकास के इसी क्रम में बैंक चंद व्यापारियों के बजाय अब आम जन का बैंक बन गया।

मानव शरीर में जैसे रक्त का प्रवाह नितांत जरूरी है अन्यथा वह मृत शरीर है, उसी प्रकार किसी अर्थव्यवस्था में अर्थ का प्रवाह नितांत जरुरी है, और इस प्रवाह को बनाए रखने में बैंक सबसे महत्वपूर्ण संस्थान हैं। सरकार की अधिकांश छोटी-बड़ी योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए रोजगारोन्मुख - सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) योजना जो कुशल तथा अकुशल लोगों को स्वयं रोजगार का सृजन करने तथा दूसरों को रोजगार प्रदान करने के लिये महत्वपूर्ण कदम है, शिक्षा-शैक्षणिक संस्थानों के विकास तथा अध्ययनरत विद्यार्थियों के अर्थ सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण, पेंशन योजना-विभिन्न प्रकार की पेंशन योजनाओं का क्रियान्वयन चाहे वो नियोजित क्षेत्र में कार्यरत लोग हों या अनियोजित क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग, बीमा- विभिन्न प्रकार की बीमा चाहे जीवनबीमा हो या भौतिक वस्तुओं की बीमा, ढाँचागत विकास - सड़क, बिजली, पानी, आवास, अस्पताल, स्कूल, मनोरंजन स्थल इत्यादि, कर वसूली- वस्तु व सेवा कर आदि सभी योजनाओं को अमलीजामा पहनाने में बैंकों की न केवल सहभागिता रही है बल्कि महत्वपूर्ण योगदान भी रहा है।

अर्थव्यवस्था और बैंकों का राष्ट्रीयकरण: सामाजिक न्याय, निजी संस्थानों पर नियंत्रण तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों के विस्तारीकरण के उद्देश्य से सन् 1969 में 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। इससे पूर्व केवल भारतीय स्टेट बैंक का सन् 1955 तथा इसके सात सहयोगी बैंकों का सन् 1960 में राष्ट्रीयकरण किया गया, जिससे कि राष्ट्रीयकृत बैंकों के विस्तारीकरण को बल मिले तथा सन् 1980 में सरकार ने 6 और बैंकों के राष्ट्रीयकरण से अपने ठोस इरादे को और मजबूत किया ताकि समाज के उपेक्षित, वंचित तथा शोषितों को समाज में उचित स्थान दिलाने में बैंक अपेक्षित सहयोग दें और इन पर किसी वर्ग विशेष की कृपापात्र बनने के बजाय सारे समाज व देश का सरोकारी बनने का तमगा हो।

सरकार की इसी सोच को और गति प्रदान करने के लिए हाल ही में भारत सरकार ने बैंकों के सहयोग से अनेक प्रभावी कदम उठाये हैं जैसे कि प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, विभिन्न प्रकार के बिलों का ऑनलाइन भुगतान जैसे बिजली, पानी, बीमा, वस्तु व सेवा कर, मोबाइल, ट्रेन, बस, हवाई जहाज आदि टिकट का आरक्षण।

हिन्द और हिन्दी : लद्दाख से कन्याकुमारी तथा अरुणाचल से गुजरात तक भारतीय जनमानस को कोई भाषा यदि जोड़ने में सबसे सक्षम प्रतीत होती है तो वो निश्चित तौर पर हिन्दी ही है। हिंदुस्तान में मुख्यत: उत्तर व मध्यक्षेत्र के रज-रज में हिन्दी का निवास है तथा पूरे हिंदुस्तान के लगभग 55 करोड़ लोगों को हिन्दी का ज्ञान है। अत: विश्व की तीसरी सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा को हम हिंदुस्तान की आम बोलचाल की भाषा कह सकते हैं।

शायद इन्हीं संदर्भों को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था :

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है।"

भारत की राजभाषा हिन्दी जन-मन की भाषा भी बने तथा इसका नित्य विकास हमारे जन-मन के विकास में सतत साझीदार हो, इसके लिए ढेरों प्रयास चल रहे हैं। इन प्रयासों में हमारी भागीदारी हो, इसे हमें स्वयं सुनिश्चित करना होगा तथा हमारे आसपास के लोग भी इसमें भागीदार बनें। यदि हम इस दिशा में कुछ प्रयास कर सकें तो यह एक उत्साहवर्धक कदम हमारे देश के विकास में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

इतिहास गवाह है कि किसी देश व समाज के विकास में जनभागीदारी अतिमहत्वपूर्ण है। जनभागीदारी सुनिश्चित करने के लिये लोगों में यह विश्वास पैदा करना होगा कि आपके द्वारा किया गया कार्य आपके तथा आपके आने वाले भविष्य के

लिये बहुत ही सकारात्मक कदम है। उन्हें इसका बोध कराना पड़ेगा कि आप जो कर रहे हैं या करना चाह रहे हैं उसे हिन्दी भाषा के प्रयोग से आसानी से किया जा सकता है और हिन्दी के प्रयोग को कतई दोयम दृष्टि से ना देखकर आँखों में गर्व की चमक आनी चाहिए।

जिस वर्ग विशेष को हिन्दी का ज्ञान तो है किंतु वो आंग्ल भाषा का उपयोग कर रहे हैं क्योंकि हिन्दी में कार्य करना उन्हें श्रेष्ठकर प्रतीत नहीं होता या उन्हें दोयम दर्जे का बोध कराता है उन्हें अपने अधिकांश कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा तथा इसके महत्व का ज्ञान कराना होगा। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू तो ये है कि उन्हें इस बात का बोध हो कि इस माध्यम से वे हिन्द और हिन्दी की छटा चमकीली कर रहे हैं।

समाज का वो वर्ग जो अल्पशिक्षित है तथा जिन्हें आंग्लभाषा का बोध नहीं, संकोचवश समाज के वर्ग विशेष से दूरी बना लेता है, उन्हें समाज के उस वर्ग के साथ लाना होगा जो उन्हें यथोचित प्रयास कर उनके अंदर विश्वास पैदा करे तथा उन्हें स्वावलम्बी बनाए। समाज का वो वर्ग जिन्हें अक्षर ज्ञान नहीं है किंतु टेलीविजन, मोबाइल आदि का प्रयोग मनोरंजन के लिये करते हैं, उन्हें भी इस दिशा में जागरूक कर तथा प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से हम स्वावलम्बी बना सकते हैं।

अत: हमारी भाषा "हिंदी" हमारे बहुत से कार्यों के संवहन व विकास में आज जो कार्य कर रही है उसमें असीम विकास व सुधार की संभावनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

बैंकिंग के बदलते परिदृश्य में हिन्दी भाषा: साहित्य समाज का आईना होता है, किंतु यह कहना कदापि अतिशयोक्ति नहीं प्रतीत होती है कि मजबूत अर्थव्यवस्था के बिना स्वस्थ व सभ्य समाज की परिकल्पना कोरी है। किसी भी देश की चलायमान प्रकृति के लिए केवल लोगों की सोच ही नहीं बल्कि कर्मक्षेत्र भी उतना ही प्रधान होना चाहिये। जिस समाज में सोच व कर्म दोनों का विकास संवेदनशीलता तथा समरसता प्रदान करते हों, वे निश्चित तौर पर उनकी अभिव्यक्ति को सही तरीके से प्रतिबिंबित करते होंगे, तथा उनकी अभिव्यक्ति उनके राष्ट्रभाषा तथा जनमानस के भाषा के साथ ही हो सकती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी इस संबंध में अपना उद्‌गार व्यक्त किया था :

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।"

भारत जैसे विशाल देश जिसमें 19500 से ज्यादा भाषाओं व बोलियों के द्वारा लोग अपने विचारों को मंच प्रदान करते हों, किसी एक भाषा के द्वारा जन-जन को जोड़ना कतई आसान नहीं है। लेकिन यह भी सर्वथा सत्य है कि हिन्दी के द्वारा हम भारत के आम जन के हृदय को स्पर्श कर सकते हैं। आज भी भारत के अधिकांश लोग हिन्दी भाषा तथा इससे मिलती-जुलती बोलियों जैसे वज्जिका, अवधी, बुंदेलखंडी, मारवाड़ी, भोजपुरी इत्यादि का प्रयोग करते हैं तथा लिखने के लिये देवनागरी लिपि का उपयोग करते हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर हमें आजकल बैंकिंग क्षेत्र में हिन्दी की बड़ी भूमिका का आभास होता है।

इस बदलते परिदृश्य में लोगों से जुड़ने व लोगों के समायोजन के लिये भाषा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भाषा वो माध्यम है जिससे मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है। किसी अच्छे समाज के लिए विचारों का आदान-प्रदान नितांत जरूरी है। हमारी भाषा ऐसी हो जो आमजन की हो। भारत जैसे देश में ये हिन्दी ही हो सकती है।

हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने कहा था :

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

अत: हमारे कार्यक्षेत्र में हम इस भाषा का जितना उपयोग करेंगे, यह हमारे देश व समाज के लिये उतना ही श्रेष्ठकर होगा।

वर्तमान में जहाँ मनुष्य सारी दुनिया को मुट्ठी में लेकर चलने का दंभ भरता हो, वहाँ वो बैंकिंग को भी मुट्ठी में समाने का साहस रखता है, किंतु वह मनुष्य जो बैंकिंग या दुनिया को मुट्ठी में रखता है, सामान्य जनमानस का प्रतीक कतई नहीं है। जहाँ बड़े-बड़े औद्योगिक शहरों व कस्बों में इस विधा की छटा तो मिलती है किंतु वो भारत जहाँ आज भी मनुष्य अपनी सामान्य जरूरतों व बैंकिंग सुविधा के लिये बैंक-शाखाओं तथा ग्राहक सेवा केन्द्र पर निर्भर करता है, यह दूर भविष्य की झाँकी लगती है।

सरकार व अपने सतत प्रयासों से बैंकों ने अपनी उपस्थिति 80% से अधिक लोगों तक पहुँचा दी है किंतु यह कटु सत्य है कि ग्रामीण इलाकों में आज भी अधिकांश लोग शिक्षा के अभाव में निकासी व जमा पर्ची भरवाने के लिये दूसरों पर निर्भर रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप इन कार्यों के एवज में उन्हें कई बार धन व समय के दुरुपयोग का सामना करना पड़ता है। आज

हिन्दी व विज्ञान के समायोजन से आम जन की सुविधाओं का विस्तारीकरण मूर्त रूप लेता परिलिक्षित होता है जैसे उँगलियों के माध्यम से खाते की जानकारी तथा बैंकिंग सुविधाओं का उपयोग, नित नए आयामों की कड़ी में इंटरनेट सुविधा की विभिन्न भाषाओं में उपलब्धता। बैंकिंग क्षेत्र का मूलमंत्र 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' है।

अर्थव्यवस्था और बैंकिंग क्षेत्र का बदलता परिदृश्य: अर्थव्यवस्था और बैंकिंग क्षेत्र का मूल उद्देश्य देश का सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, मूलभूत ढाँचे का विकास, निवेश इत्यादि है। आज के परिदृश्य में समाज व देश ऐसी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हैं जिसमें सामाजिक मूल्य ऐसे हों जहाँ लोगों में ऊँच-नीच, जाति-धर्म का भेद न हो, बल्कि लोगों के बीच अपने कार्यों के प्रति जागरुकता, प्रतिस्पर्धा, स्वीकार्यता व सृजनात्मकता हो। आज बैंक न केवल पुरानी योजनाओं का संवहन कर रहे हैं अपितु डिजिटलाइजेशन, शेयर-बाजार, कर-वसूली, काले धन पर अंकुश, आतंकवाद के अर्थतंत्र पर कुठाराघात करने का काम भी बखूबी कर रहे हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में अब एक सृजनात्मक पहल की शुरुआत हो चुकी है -"बैंक आपके द्वार" अर्थात एटीएम मशीन, नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग आदि माध्यमों के द्वारा बैंक आज घर-घर दस्तक दे रहा है। ग्राहक सेवा केन्द्रों के माध्यम से सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के क्रियान्वयन में अपेक्षित गति आ रही है तथा समाज का हर वर्ग इन योजनाओं से जुड़ रहा है।

ग्राहक सेवा केन्द्र की सफलता की मुख्य वजह बैंक मित्रों का क्षेत्रीय ग्राहकों, उनकी भाषा, वेशभूषा, खानपान तथा विश्वास से जुड़ाव है जो उन्हें अपनी बातों को समझाने व समझने में आसानी प्रदान करता है।

हम आज ऐसे भविष्य के सपने संजोये हैं जहाँ समाज के सभी वर्ग मुख्यत: किसान, जवान, मजदूर तथा समाज के अन्य पिछड़े वर्ग अपने कार्यों के लिये स्वावलम्बी हो तथा हमारे बच्चे जो कल के भविष्य हैं उनका उचित शारीरिक व मानसिक विकास हो और वो अपनी भाषा तथा नैतिक मूल्यों की रक्षा व उनका संवहन कर सके।

अंततोगत्वा हम इस निष्कर्ष की पर पहुँचते हैं कि अर्थ व्यवस्थित हो, इसके लिये हमें बैंकों को व्यवस्थित करना होगा और बैंकों को व्यवस्थित करने के लिये लोगों की जरूरतों के मुताबिक हमें अपने आप को चलाना होगा और इस क्षेत्र में हिन्दी के उपयोग को उचित स्थान देना एक सार्थक कदम होगा, जैसे बैंकों की नियमावली का प्रचार-प्रसार, पत्राचार का माध्यम, सूचनापट्ट आदि हिन्दी में हों। प्रोत्साहित करने वाले कदम जैसे हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान शिविर, हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिन्दी तात्कालिक भाषण आदि अपने लक्ष्य को हासिल करने में पथप्रदर्शक की भूमिका निभा सकते हैं। अंत में, मैं अपनी कविता कि कुछ पंक्तियों के माध्यम से अपने विचारों को यहीं विराम देना चाहूँगा :

अर्थ भी हो, तन्त्र भी हो,
बैंक भी हो, विकास भी हो।
हिन्द भी हो, हिन्दी भी हो,
सुखद देश की अभिलाषा भी हो।

देश मेरा अर्श पर हो ,
मन की अभिलाषा भी हो।
लोगों का विश्वास ऐसा,
जो सुखद परिदृश्य की परिभाषा भी हो।

हिन्दी की भूमिका ऐसी,
जैसे माँ का आँचल हो।
गहराई ऐसी जैसे हिन्द महासागर हो,
ऊँचाई ऐसी जैसे हिमालय की चोटी हो।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत,
अर्थ भारत, तन्त्र भारत।
बैंक भारत, विकास भारत,
हिन्द भारत, हिन्दी भारत।

भारतवर्ष के ऐतिहासिक विश्वविद्यालय

मऊ मैत्रा
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय

भारत का इतिहास अत्यंत समृद्धशाली रहा है। हम सुनते हैं कि हमारे देश को 'सोने की चिड़िया' भी कहा जाता था। अपने ज्ञान, विवेक और बुद्धि बल के कारण देश को विश्वगुरु की संज्ञा भी दी गई थी। शिक्षा प्रदान करने की परंपरा का उल्लेख हमारे कई पौराणिक ग्रंथों में मिलता है। गुरु द्रोणाचार्य और उनसे जुड़ी दंतकथाएँ काफी प्रचलित हैं। वैदिक काल से ही भारत में शिक्षा को बहुत महत्व दिया गया है। इसलिए उस काल से ही गुरुकुल और आश्रमों के रूप में शिक्षा केंद्र खोले जाने लगे थे। वैदिक काल के बाद जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता गया। भारत की शिक्षा पद्धति भी और ज्यादा पल्लवित होती गई। गुरुकुल और आश्रमों से शुरू हुआ शिक्षा का सफर उन्नति करते हुए विश्वविद्यालयों में तब्दील होता गया। अध्ययन और अध्यापन की श्रेष्ठ गुणवत्ता के कारण विश्वभर से छात्र भारत में स्थित विश्वविद्यालयों में पठन-पाठन के लिए आते थे। भारत में ऐसे कई विश्वविद्यालयों की जानकारी मिलती है जिनका ईसा पूर्व से लेकर 12वीं-13वीं शताब्दी तक अध्ययन के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विदेशियों द्वारा लिखी गई पुस्तकों में भी हमारी इस विरासत का उल्लेख मिलता है। परंतु धीरे-धीरे ये विश्वविद्यालय विलुप्त तथा नष्ट होते चले गए या तत्कालीन आक्रमणकारियों ने उन्हें नष्ट कर दिया।

ऐसे ही कुछ ऐतिहासिक विश्वविद्यालयों में प्राचीनतम और प्रमुख विश्वविद्यालय में तक्षशिला का नाम सबसे पहले आता है। यह सातवी सदी ईसवी पूर्व से 460 ईसवी तक था। यह प्राचीन भारत में गान्धार की राजधानी और शिक्षा का प्रमुख केन्द्र हुआ करता था। तक्षशिला के पाठ्यक्रम में आयुर्वेद, धनुर्वेद, हस्तविद्या, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, गणित, ज्योतिष, गणना, वाणिज्य, तन्त्रशास्त्र, संगीत, नृत्य और चित्रकला आदि का मुख्य स्थान था। इस विश्वविद्यालय में लगभग 10500 विद्यार्थी पढ़ाई करते थे। इनमें से कई विद्यार्थी अलग-अलग देशों से थे। वहां का अनुशासन बहुत कठोर था। यह हिन्दू और बौद्ध दोनों के लिए महत्व का केन्द्र था। चाणक्य और पाणिनि जैसे विद्वान इसी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे। तक्षशिला के अवशेष वर्तमान समय में पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के रावलपिण्डी जिले में मिले हैं। यह एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है।

आधुनिक बिहार राज्य की राजधानी पटना से 55 मील दूर नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष भी अपनी गौरवशाली व समृद्ध इतिहास की गाथा का वर्णन करते हैं। 450 ईसवी पूर्व से 1193 ईसवी तक यह विश्वविद्यालय अपनी उत्कर्षता की चरम सीमा पर था और उच्च शिक्षा का विख्यात केन्द्र था। सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला

का अद्भुत नमूना था। यहाँ नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था जिसमें 3 लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था। इसमें ज्योतिष, खगोल विज्ञान, व्याकरण, तर्क, साहित्य, कृषि और औषधि जैसे विभिन्न विषयों पर हजारों की संख्या में पांडुलिपियां थीं। 1193 में बख्तियार खिलजी की सेना ने इसे जलाकर पूर्णत: नष्ट कर दिया। कहा जाता है कि पुस्तकालय इतना विशाल था कि यह आग तीन महीनों तक जलती रही। इस विश्वविद्यालय के अवशेष चौदह हेक्टेयर क्षेत्र में मिले हैं। खुदाई में मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था। आज भी यहां दो मंजिला इमारत शेष है। एक छोटा सा प्रार्थनालय भी अभी सुरक्षित अवस्था में बचा हुआ है जिसमें भगवान बुद्ध की भग्न प्रतिमा है।

विक्रमशिला भी भारत का प्रसिद्ध शिक्षा-केन्द्र रहा है। विक्रमशिला 8वीं शताब्दी में पाल राजवंश के राज्यकाल में स्थापित किया गया था। बिहार के भागलपुर जिले में इसके अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के तुरन्त बाद ही अन्तरराष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर लिया था। तिब्बत के साथ इस शिक्षा केन्द्र का प्रारम्भ से ही विशेष संबंध रहा है। इस विश्वविद्यालय में व्याकरण, न्याय, दर्शन और तंत्र के अध्ययन की विशेष व्यवस्था थी। इस विश्वविद्यालय की व्यवस्था अत्यधिक सुसंगठित थी। बंगाल के शासक शिक्षा की समाप्ति पर विद्यार्थियों को उपाधि देते थे जो उसके विषय की दक्षता का प्रमाण माना जाता था। इस विहार के नष्ट होने का कारण बख्तियार खिलजी ही है।

इस शृंखला में पुष्पगिरी विश्वविद्यालय का नाम भी सामने आता है जिसकी स्थापना कलिंग शासकों द्वारा तीसरी शताब्दी में उड़ीसा में की गई। 11वीं शताब्दी तक वह काफी विकसित हुआ था। कलिंग साम्राज्य आधुनिक ओडिशा के कटक और जाजपुर जिलों में फैला हुआ था। पुष्पगिरी विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रमुख केन्द्रों में से एक था। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने अपने यात्रा संस्मरणों में इस विश्वविद्यालय को बौद्ध शिक्षा के लिए सबसे अच्छे केन्द्र के रूप में वर्णित किया है। आज भी पुष्पगिरी विश्वविद्यालय के खंडहरों को यहां देखा जा सकता है।

सौराष्ट्र (गुजरात) में स्थित वल्लभी विश्वविद्यालय छठी शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक काफी प्रसिद्ध था। यह विश्वविद्यालय धर्मनिरपेक्ष विषयों की शिक्षा के लिए भी जाना जाता था। यही कारण था कि इस शिक्षा केन्द्र में विद्या अर्जन के लिए पूरी दुनिया से विद्यार्थी आते थे।

उदांतपुरी या ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना तत्कालीन मगध यानि वर्तमान बिहार में पाल वंश के राजाओं द्वारा की गई थी। आठवीं शताब्दी के अंत से 12वीं शताब्दी तक लगभग 400 सालों तक इसका विकास चरम पर था। उदांतपुरी विश्वविद्यालय का उत्खनन कार्य नहीं होने के कारण यह आज भी धरती के गर्भ में दबा है। इसके कारण बहुत कम लोग इस विश्वविद्यालय से परिचित हैं।

सोमपुरा विश्वविद्यालय, जो अब बांग्लादेश में है, की स्थापना भी पाल वंश के राजाओं ने की थी। यह भव्य विश्वविद्यालय लगभग 27 एकड़ में फैला था और बौद्ध धर्म की शिक्षा देने वाला सबसे अच्छा शिक्षा केन्द्र था। इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित किया गया है।

भारत में ऐसे अनेक ऐतिहासिक गुरुकुल और विश्वविद्यालय थे जिससे भारत को विश्वगुरु का स्थान मिला था। भारत की शिक्षा पद्धति तथा शिक्षण के विषय अत्यंत उच्च कोटि के थे जिसके कारण दूर-दूर से विद्यार्थी भारत के विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने आते थे। भारत पर कब्जा करने तथा यहाँ की संस्कृति को समाप्त करने के उद्देश्य से आक्रमणकारियों ने भारतवर्ष के लगभग सभी विश्वविद्यालयों तथा पाठशालाओं को नष्ट कर दिया। आज जब हम आज़ादी का अमृत काल मना रहे हैं तो यह आवश्यक है कि हम अपनी पुरातात्विक समृद्ध संस्कृति के बारे जागरूक हों।

नोबेल पुरस्कार 2022

डॉ. पीयूष राज
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय

ज्ञान-विज्ञान की प्रगति में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष नोबेल पुरस्कारों की घोषणा का इंतजार रहता है। ये पुरस्कार भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, साहित्य, शांति एवं अर्थशास्त्र के क्षेत्र में संपूर्ण मानव जाति के लाभ के लिए योगदान हेतु प्रदान किए जाते हैं। उक्त क्षेत्रों में इस वर्ष ये पुरस्कार इस प्रकार से दिये गए हैं -

भौतिकी

इस बार का भौतिक विज्ञान का नोबेल पुरस्कार एलेन ऐस्पेक्ट, एंटन जेलिंगर और जॉन क्लाउजर को फोटोन संबद्धता (फोटोन इंटेंगलमेंट) का परीक्षण करने, बेल असमानता के पालन न होने को सिद्ध करने तथा क्वांटम विज्ञान को नई दिशा देने के लिए दिया गया है।

न्यूटन के नियम, धरती से लेकर अंतरिक्ष तक काम करते हैं परंतु मूलभूत तत्वों जैसे इलेक्ट्रॉन या फोटोन पर लागू नहीं होते हैं। इन तत्वों की स्थिति तथा मोमेंटम को एक साथ सटीक नहीं मापा जा सकता है। (हाइजनबर्ग अनिश्चितता का सिद्धांत) इस मूलभूत अंतर से कई अंतर पैदा होते हैं जिनमें फोटोन संबद्धता (एंटेंगलमेंट) भी एक है।

फोटोन संबद्धता से यह तात्पर्य है कि दो फोटोन चाहे आपस में कितनी भी दूरी पर क्यों न हों, वे एक दूसरे से संबद्ध रहते हैं।

आजकल प्रकाश के क्वांटम स्वभाव के आधार पर लेजर तैयार किए जा रहे हैं। भौतिकी के नोबेल पुरस्कार विजेताओं के कार्यों से क्वांटम क्रिप्टोग्राफी संभव होगी जिससे अधिक सुरक्षित कंप्यूटर नेटवर्क तैयार हो सकेंगे।

चिकित्सा विज्ञान

चिकित्सा विज्ञान का नोबेल पुरस्कार इस वर्ष सवान्ते पाबो को दिया गया है। मनुष्यों की कई बीमारियां उनके जीन से संबंधित होती हैं। जैसे कि ऑटोइम्यून बीमारियां, टाइप 2 डायबिटीज, प्रॉस्टेट कैंसर आदि। पाबो ने अपने कार्यों में लुप्त प्रजातियों की जिनोम सीक्वेंसिंग की है। उन्होंने आधुनिक मानवों के लुप्त संबंधी "निएंडरथल" की भी जिनोम सीक्वेंसिंग की है जिनका डीएनए यूरोपीय और एशियाई लोगों में पाया गया है। इनके कार्यों से आनुवांशिक रोगों के निवारण में सहायता मिलेगी।

रसायन विज्ञान

नए पदार्थों की खोज करना, आधुनिक रसायन विज्ञान का एक प्रमुख कार्य रहा है। बैरी शार्पलेस ने रसायन तैयार करने की ऐसी विधि विकसित की है जिसमें कम से कम बर्बादी होती है जो पर्यावरण के अनुकूल है। इसे "क्लिक केमिस्ट्री" कहते हैं। बैरी शार्पलेस को यह पुरस्कार दूसरी बार प्राप्त हुआ है तथा इस प्रकार का गौरव रखने वाले वे एकमात्र जीवित व्यक्ति हैं। इसके अतिरिक्त बैरी शार्पलेस एवं मॉर्टेन मिएलडॉल ने क्लिक केमिस्ट्री का रत्न कहे जाने वाले "कॉपर कैटालाइज्ड अजाइड-एल्काइन साइक्लोएडिशन रिएक्शन" का भी विकास किया है जिसका उपयोग दवा बनाने के लिए किया जा रहा है। पुरस्कार की तीसरी विजेता कैरोलिन बेरटोजी हैं जो क्लिक केमिस्ट्री को नए स्तर पर ले गई हैं (बायो-ऑर्थोगोनल केमिस्ट्री)। उन्होंने एक ऐसे क्लिक रिएक्शन की खोज की है जो ग्लाइकेन (अत्यंत महत्वपूर्ण कॉम्पलेक्स कार्बोहाइड्रेट) को ट्रैक कर सकता है। इसके माध्यम से कैंसर के उपचार को और अधिक सटीक एवं लक्ष्य केंद्रित बनाया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य का नोबेल पुरस्कार इस वर्ष फ्रेंच लेखिका एनी एरनॉक्स को दिया गया है। साहित्य का नोबेल पुरस्कार जीतने वाली वे पहली फ्रांसीसी महिला हैं। साधारण पृष्ठभूमि से आने वाली इस लेखिका ने अपने लेखन को अपनी आपबीती के रूप में परिभाषित किया है। 1983 के उपन्यास "ला प्लेस"

से उनको प्रसिद्धि मिली। "लवेनेमेंट (हैपनिंग)" में उन्होंने अवैध गर्भपात को विषयवस्तु बनाया है। उनके इस उपन्यास के आधार पर एक सुप्रसिद्ध फिल्म भी बन चुकी है। उनके लेखन कार्य पर नोबेल समिति का कहना है कि उनका लेखन एक राजनीतिक कार्य ही है जो सामाजिक असमानता के प्रति हमारी आंखें खोलता है। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए भाषा को एक अस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया है तथा इस अस्त्र के माध्यम से उन्होंने निर्मूल कल्पना लोक के पर्दे को काट दिया है। आजकल सोशल मीडिया पर एनी एरनॉक्स का यह कथन दिखाई दे रहा है कि "दर्द को बरकरार नहीं रखा जा सकता है। इसके स्वरूप को बदलने की आवश्यकता होती है। इसे हास्य में परिवर्तित किया जाना चाहिए।" मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से आज के समय में यह कथन अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

शांति

शांति का नोबेल पुरस्कार इस वर्ष मानवाधिकारों से संबंधित व्यक्तियों या संस्थाओं को दिया गया है। पहले विजेता बेलारूस के एलेस बालियात्स्की हैं जो अपने देश में लोकतंत्र तथा मानवाधिकारों के समर्थक रहे हैं। उन्होंने वियासना नामक संस्था का गठन किया था जो मानवाधिकारों के लिए काम करती है। दूसरी विजेता रूस की मानवाधिकार संस्था मेमोरियल है। इस संस्था का गठन 1987 में हुआ था तथा तब से ही यह अपने देश में सिविल सोसायटी को मजबूत करने का काम कर रही है। पुरस्कार की तीसरी विजेता यूक्रेन की संस्था दि सेंटर फॉर सिविल लिबर्टीज है। इस संस्था का गठन 2007 में किया गया था। यह संस्था भी अपने देश में लोकतांत्रिक मूल्यों तथा मानवाधिकारों को मजबूत करने का काम कर रही है। मौजूदा युद्ध के दौरान भी इस संस्था के प्रयास सराहनीय एवं उल्लेखनीय रहे हैं।

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार इस बार बैंकों और वित्तीय संकट पर शोध के लिए बेन बर्नान्के, डग्लस डायमंड और फिलिप डायबविग को प्राप्त हुआ है। 2007-08 में आई आर्थिक मंदी के दौरान बेन बर्नान्के फेडरल रिजर्व (अमेरिका का केंद्रीय बैंक) के अध्यक्ष थे। 1930 के दशक की महामंदी पर अपने शोध कार्य का उपयोग करते हुए बेन बर्नान्के ने मंदी से निपटने के लिए सराहनीय उपाय किए। उन्होंने अल्पावधि कर्ज पर ब्याज दर को शून्य कर दिया और फेडरल रिजर्व को बांड और मॉर्गेज निवेश खरीदने के निर्देश दिए। बेन बर्नान्के के शोध तथा उनके कार्य पुन: प्रासंगिक हो गए जब कोविड-19 महामारी के दौरान अर्थव्यवस्था में नरमी आ गई। उनके कार्यों का अनुकरण करते हुए पुन: अल्पावधि कर्ज पर ब्याज दर को शून्य के करीब ला दिया गया तथा बैंकिंग तंत्र में नकदी का प्रवाह बढ़ाया गया। इससे अर्थव्यवस्था को सहारा देने में मदद मिली।

डायमंड और डायबविग ने अल्पावधि ऋण को दीर्घावधि ऋण में बदलने की प्रक्रिया से जुड़े जोखिम पर शोध किया है। उन्होंने अपने शोधों में बताया है कि कैसे जमाराशियों पर सरकारी गारंटी, वित्तीय संकट को बढ़ने से रोक सकती है। नोबेल समिति ने कहा कि विजेताओं के शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि बैंकों को पतन से बचाना क्यों महत्वपूर्ण है। समिति ने कहा कि 1980 के दशक के आरंभ में अपने शोध के माध्यम से इन अर्थशास्त्रियों ने वित्तीय बाजार को विनियमित करने और वित्तीय संकट से निपटने की नींव रखी है। इस प्रकार तीनों अर्थशास्त्रियों के कार्य, वित्तीय स्थिरता के लिए अत्यंत मूलभूत एवं अत्यावश्यक कहे जा सकते हैं।

उपसंहार

यदि संक्षेप में कहा जाए तो भौतिकी एवं रसायन विज्ञान के पुरस्कार क्रमश: क्वांटम विज्ञान एवं क्लिक केमिस्ट्री जैसे विज्ञान के नए उभरते क्षेत्रों से संबंधित हैं। साथ ही भौतिकी एवं चिकित्सा विज्ञान के पुरस्कार क्रमश: फोटोन एवं जीन जैसे मूलभूत तत्वों से जुड़े हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि इस वर्ष के विज्ञान के नोबेल पुरस्कारों में विज्ञान के नए क्षेत्रों के साथ-साथ मूलभूत तत्वों से संबंधित शोध को भी महत्व दिया गया है।

साहित्य एवं शांति के पुरस्कारों में क्रमश: मानवीय संवेदना एवं मानवाधिकारों को महत्व दिया गया है। अर्थव्यवस्था में बैंकों के केन्द्रीय महत्व एवं उनके संकट की रक्षा के उपाय के कार्यों को अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है जो आम से लेकर खास व्यक्ति तक के वित्तीय हित के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक एवं मूलभूत विषय है। उक्त उल्लेखनीय कार्यों के लिए पूरी दुनिया इस वर्ष के नोबेल पुरस्कार विजेताओं को बधाई दे रही है तथा हम सब भी इसमें शामिल हैं।

प्रधान कार्यालय

हिन्दी माह 2022

बैंक ऑफ़ इंडिया में 14 सितंबर 2022 से 14 अक्टूबर 2022 तक हिन्दी माह का आयोजन किया गया। प्रधान कार्यालय में कार्यपालक निदेशक श्री स्वरूप दासगुप्ता ने विभिन्न विभागों के महाप्रबंधकों की उपस्थिति में "75 वर्ष - आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व शृंखला के अंतर्गत 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी' नामक पुस्तिका का विमोचन किया।

हिन्दी माह में विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं यथा 'वरिष्ठ कार्यपालकों सहित सभी स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान', 'बैंकिंग ज्ञान एवं राजभाषा ज्ञान', 'चित्रकहानी', 'हिन्दी वर्ग-पहेली', 'हिन्दी टंकण', 'हिन्दी गीत गायन' और 'हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। बैंक की विदेश स्थित शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों के लिए संस्मरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रधान कार्यालय में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सुरक्षा विभाग, अनुपालन विभाग और बोर्ड सचिवालय को पुरस्कृत किया गया।

बंगाल की माँ दुर्गा:
विश्व की एक सांस्कृतिक विरासत

रात्री बंदोपाध्याय
वरिष्ठ प्रबंधक
कोलकाता अंचल

सावन का बादल बरसते-बरसते जब श्रांत होकर धीरे- धीरे दूर देश की तरफ जाने लगता है, आसमान अपना फिरोजा रंग वापस पाकर झिलमिलाते हुए सूरज को आमंत्रण देता है, धरती अपने को हरे रंग से सजा देती है, गृहस्थ के घर पर फसल की डाली भर उठती है – तब हिमालय कन्या पार्वती को याद आता है अपना मायका। वह अपने पति से अनुमति मांगती है अपने मायके जाने के लिए। शिवजी पहले नाराज होते हैं, परंतु हर पति के तरह बाद में वे भी मान जाते हैं पत्नी की आँसू भरी आखें देख कर। बस और कोई मुश्किल नहीं रही। यशंग देही, रानंग देही पार्वती अपने चार बच्चों (कार्तिक, गणेश, लक्ष्मी और सरस्वती) के साथ चार दिनों के लिए आ जाती हैं अपने मायके इस धरती पर। बंगाल के हर घर में शुरू हो जाती है बेटी को लाने की प्रस्तुति। घर की साफ-सफाई, नए कपड़े, नए बर्तन, अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार ख़रीदारी — बेटी जो आ रही है एक साल बाद।

बंगाल का हर बच्चा यही कहानी सुन सुनकर बड़ा होता है। देवी भी एक नारी है - कभी कन्यारूपी, कभी मातृरूपी, तो कभी असुरनाशिनी। पूजा भी उसी तरह की जाती है। जब जिस रूप की पूजा की जाती है - फूल-चन्दन, दिया, धूप आदि के साथ-साथ माँ के मुखमंडल में भी वही रूप नज़र आने लगता है। ढाक, ढ़ोल, कांसर, घंटा के साथ माँ की पूजा और आरती देखने स्वयं शिवजी आ जाते हैं कैलाश छोड़कर, ऐसी मान्यता है।

शरद ऋतु के आश्विन महीने में षष्ठी के दिन माँ के बोधन से शुरू होती है दुर्गा पूजा और खत्म होती है दशमी के दिन विसर्जन के साथ। दशहरे के दिन विसर्जन के साथ-साथ माँ दुर्गा बच्चों के साथ वापस चली जाती जाती है अपनी ससुराल कैलाश पर। मायके में छा जाती है उदासी। फिर इंतजार एक साल के लिए।

माँ दुर्गा के आने से चार दिन चारों तरफ जो आनंद और उत्सव का माहौल बनता है, माँ के विसर्जन के साथ ही उस महल में फिर अनकही उदासी छा जाती है।

इन चार दिनों देवी की पूजा की जाती है। सिर्फ श्रद्धा के साथ ही नहीं, बल्कि एक अनोखे प्यार और अपनेपन के साथ। वो पूजित होती हैं सार्वजनिक रूप से - शहर के हर मुहल्ले और गाँव में। यहाँ गरीब, अमीर, हर धर्म-जाति के लोगों का अधिकार है देवी माँ के सामने आकर पूजा-अर्चना करने का।

वह उत्सव का माहौल, वह सुंदर आलोक, वह रौशनी की जगमगाहट, कुम्हार के हाथों से बनी अपरूप देवी मूर्तियाँ, पांडाल

की आश्चर्यजनक कारीगरी, चारों तरफ खुशियाँ - अन्य देश के लोगों की भी आकर्षित करने लगी हैं। पूजा, प्यार और प्रीति के इस उत्सव को यूनेस्को ने कल्चरल हेरिटेज की स्वीकृति दी है दिसम्बर 2021 में।

कैलाश में बैठी पार्वती को यह खबर अभी तक मिली है या नहीं, पता नहीं, लेकिन मायके आने पर यह स्वीकृति सुनकर वे भी बहुत खुश हो जाएँगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

बैंकिंग में विश्वास की भूमिका

एक अत्यधिक लीवरेज्ड संस्थान में 'विश्वास' कुंजी के समान है। इसलिए, बैंकिंग में विश्वास अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी बैंकिंग गतिविधियां विश्वास के चारों ओर घूमती हैं। विश्वास भंग, बैंकिंग में शामिल नैतिकता के एकदम विपरीत है। बैंक में नैतिकता, सही और उचित प्रकार से संगठनात्मक संस्कृति देने के लिए एक जोड़ने वाला तत्व है। ईमानदारी और पारदर्शिता बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों की व्यवस्था प्रणाली में जनता का विश्वास बनाने के लिए वित्तीय संस्थानों की प्रतिष्ठा से अटूट रूप से जुड़ी हुई है।

बैंकिंग में नैतिकता को लागू करने के बारे में बहुत अच्छी तरह से कल्पना की जा सकती है, लेकिन यह विवादास्पद प्रश्न अब भी उठता है कि नैतिक व्यवहार और अभ्यास क्या मात्र एक तरफ से है या वह काउंटर पार्टियों पर भी लागू होता है। ग्राहक, शेयरधारक, विनियामक और कर्मचारी काउंटर पार्टी के चार स्तंभों को पूरा करते हैं। एक मजबूत बैंकिंग प्रणाली स्वाभाविक रूप से तब प्रबल होती है, जब स्वयं बैंक और कथित चारों स्तंभ नैतिक प्रथाओं का पूर्ण पालन करते हैं। यह आज के समय और भविष्य के बैंकिंग पेशेवरों के लिए अनिवार्य और बाध्यकारी है कि वे निरंतर अच्छे कॉर्पोरेट गवर्नेंस (प्रणाली, प्रक्रियाएं व सिद्धांत) और नैतिक व्यापार सिद्धांतों को आत्मसात करें। इसके अभाव में, सभी की खुशी के लिए एक मजबूत बैंकिंग प्रणाली की प्राप्ति नहीं होती है।

कुछ समय पहले हमने सब-प्राइम आपदा देखी थी, जिसने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को भारी मुश्किलों में धकेल दिया था। बढ़ती धोखाधड़ी गतिविधियां, साइबर अपराध, बढ़ता हुआ एनपीए और पीएमसी बैंक जैसी विफलता नैतिक प्रथाओं में कमी के कारण हैं। समय पर अनैतिक व बेईमान गतिविधियों का पता लगाने और उनकी रोकथाम के लिए नियंत्रण व पर्यवेक्षण तंत्र अपर्याप्त हो सकता है, परन्तु मूल्यों में सामान्य गिरावट विकृतियों का कारण बनती हैं।

टीम- एफ आर एम डी एवं ई एफ आर एम एस

सुश्री विजिलेंट और मिस्टर प्रूडेंट का क्या कहना है?

बैंकिंग परिवेश में चेक संबंधी धोखाधड़ियाँ लगातार हो रही हैं और यह गंभीर चिंता का विषय है। यह देखा गया है कि ऐसी कई धोखाधड़ियाँ रोकी जा सकती थीं यदि चेक के व्यवहार और/या प्रसंस्करण और खातों में संचालन की निगरानी के समय रोकथाम के उपाय लागू किए जाते और उपयुक्त जाँच -पड़ताल की गयी होती।

टीम एफआरएमडी और ईएफआरएमएस द्वारा संकलित

घटनाओं में देखी गई प्रमुख संभावनाएं:-

- गैर-घरेलू शाखा जब अंचल/अन्य-अंचलों की किसी अन्य शाखा के खाते में मोबाइल परिवर्तन, चेक के प्रसंस्करण आदि से सम्बंधित सीआई (ग्राहक प्रेरित) के बजाय बीआई (बैंक प्रेरित) के रूप में कोई इंटर-सोल लेनदेन पोस्ट करती है, तो एसएमएस उत्पन्न नहीं होगा।
- चेकों पर संभावित काट-छांट/विकृतियों/हेराफेरी/अनधिकृत संशोधन के लिए उचित जांच की अनदेखी की जाती है और चेक ड्रॉप-बॉक्स को हर समय सीसी टीवी निगरानी में सुरक्षित नही रखा जाता है।
- प्रत्येक परिवर्तन पर ग्राहक के अधिकृत हस्ताक्षर द्वारा समर्थन को नजरअंदाज कर दिया जाता है और/या पुष्टि के लिए ग्राहक से संपर्क करने में चूक होती है।
- काउंटरों को बिना सुरक्षा के छोड़ दिया जाता है और संवेदनशील स्टेशनरी को बिना निगरानी के खुला छोड़ दिया जाता है।
- जब ग्राहक कॉल नहीं उठाता; अतिरिक्त सावधानी जैसे कि सेवा शाखा से चेक की छवि को प्राप्त करके चेक-सम फीचर को सत्यापित करना छूट जाता है और रोकथाम की संभावना कम हो जाती है।

अभी क्या करें?

- ग्राहकों और कर्मचारियों को इस तरह से शिक्षित करें कि वे अधिक से अधिक पॉजिटिव पे सिस्टम (पीपीएस) को अपनाएं एवं अधिदेश सीमा को मौजूदा रु. 5.00 लाख से कम करके रु. 50000.00 और उससे अधिक के सभी चेकों के लिए अपनाएं। इससे जालसाजों को हतोत्साह किया जा सकेगा।
- जब भी एक से अधिक चेक और/या एकल चेक प्रत्येक रु. 50,000 और/या 1,00,000 या 2,00,000 के ठीक नीचे प्रस्तुत किया जाता है तब अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है और ग्राहक से सम्बंधित चेक की पुष्टि के लिए फ़ोन/कॉल करना चाहिए।
- जब तक पीपीएस भुगतान के सभी चैनलों पर लागू नहीं हो जाता है (जो वर्तमान में सीटीएस-समाशोधन के तहत केवल चेक को कवर कर रहा है), तब तक शाखाओं को अपनी तरफ से गैर-घरेलू (नॉन-होम) चेक का भुगतान करने से पहले घरेलू/मूल शाखा को कॉल करने की आदत डालनी चाहिए।
- सभी ग्राहकों को खाते में अपना मोबाइल नंबर/ई-मेल आईडी पंजीकृत/अपडेट करने के लिए शिक्षित करें और उनके द्वारा न किए गए संव्यवहार का एसएमएस अलर्ट प्राप्त होने पर तुरंत शाखा को सूचित करने के लिए ग्राहकों के बीच जागरूकता फैलाएं।

सुनिश्चित करें कि आपका ग्राहक जागरूक हो कि उन्हें क्या मिल रहा है। उन्हें यह समझने के लिए शिक्षित करें कि उन्हें आपके साथ व्यापार क्यों करना चाहिए।

शेप हाइकेन

(शेप हाइकेन एक ग्राहक सेवा विशेषज्ञ, लेखक और वक्ता हैं। उनकी पुस्तक 'द अमेज़मेंट रेवोल्यूशन' न्यूयॉर्क टाइम्स, वॉल स्ट्रीट जर्नल और यूएसए टुडे द्वारा संकलित सूचियों पर बेस्टसेलर थी।)

- समाशोधन के तहत लेनदेन की वास्तविकता के संबंध में या काउंटर पर लेनदेन में तीसरे पक्ष के शामिल होने पर पुष्टि के लिए शाखा को पंजीकृत टेलीफोन/ मोबाइल-नंबर पर ग्राहक से संपर्क करने की आदत डालनी चाहिए।
- शाखा, चेक में दर्ज विशिष्ट "चेक-सम" संख्या का सत्यापन करे। काउंटर या समाशोधन या गैर-घरेलू शाखाओं पर प्रस्तुति के तरीके के बावजूद अन्य सत्यापन के साथ इस संख्या को बिना किसी चूक के सत्यापित करने के लिए शाखाओं में कार्य किया जाना चाहिए।
- जब ग्राहक कॉल नहीं उठाता है तब चेक-सम विशेषता को सत्यापित करने के लिए शाखा द्वारा सर्विस शाखा से चेक की छवि मंगाने का सुझाव दिया जाता है ताकि रोकथाम की संभावना अधिक हो सके।
- गैर-घरेलू शाखा में खाताधारक के मोबाइल नंबर को बदलने/अद्यतन करने के अनुरोध पर केवल तभी विचार किया जाना चाहिए, जब खाताधारक व्यक्तिगत रूप से गैर-घरेलू शाखा में उपस्थिति दे। खाताधारक की सही पहचान सुनिश्चित करने के साथ नियमत: केवाईसी दस्तावेज भी प्राप्त किए जाने चाहिए और उचित तौर पर प्रमाणीकरण किया जाना चाहिए।
- ग्राहक द्वारा प्रेरित लेनदेन जैसे नकद भुगतान, अंतरण अनुरोध को सीआई (ग्राहक प्रेरित) के रूप में पोस्ट किया जाना चाहिए ताकि बैंक प्रणाली ग्राहकों को एसएमएस वितरित कर सके। सीबीएस के टीएम मेनू में बीआई (बैंक प्रेरित) के रूप में चेक पोस्ट करने से ग्राहकों को एसएमएस अलर्ट नहीं मिलते हैं।
- यूवी लैम्प के माध्यम से चेक की सत्यता की जांच करने जैसे निवारक उपाय संग्रहकर्ता बैंक (हमारे बैंक द्वारा समाशोधन के लिए प्रस्तुत किए गए जावक चेक) द्वारा किए जाने चाहिए; इसके अलावा, एनईएफटी/ आरटीजीएस सहित नकद भुगतान/ राशि अंतरण के लिए दिए गए चेक के लिए यूवी लैंप का उपयोग करने की आदत डालें।
- धोखाधड़ी संबंधी लेनदेन की किसी भी संदिग्ध घटना का शीघ्र पता लगाने के लिए ईएफआरएमएस (एंटरप्राइज फ्रॉड रिस्क मैनेजमेंट सिस्टम) / ईडब्ल्यूएस (अर्ली वार्निंग सिग्नल्स) के माध्यम से उत्पन्न अलर्ट की विशेष रूप से शाखा/अंचल/एलसीबी को निगरानी करनी चाहिये।
- भुगतान करने वाली शाखा को यह देखना चाहिए कि जब संग्रहकर्ता बैंक घटना की तारीख से 3 सप्ताह के भीतर दावे का भुगतान नहीं करता है, तब पता लगाने या शिकायत की तारीख, जो भी पहले हो, से 3 महीने के भीतर पीआरडी के साथ दावा दर्ज करना अनिवार्य है।

पीपीएस (पॉजिटिव पे सिस्टम) तंत्र में, चेक जारीकर्ता खाताधारक को चेक लाभार्थी को सौंपने से पहले बैंक के साथ जारी किए गए चेक का विवरण साझा करना होगा। विवरण में चेक नंबर, चेक की तारीख, भुगतानकर्ता का नाम, आहरणकर्ता का खाता नंबर, राशि आदि शामिल हैं। जब लाभार्थी बैंक में चेक जमा करता है (काउंटर पर या प्रस्तुतकर्ता बैंक के माध्यम से समाशोधन में), चेक पॉजिटिव पे सिस्टम के माध्यम से प्रदान किए गए विवरण यदि मेल खाते हैं, तभी नकदीकरण/चेक-पासिंग किया जाता है।

-हम अगले अंक में अधिक जानकारी के साथ वापस आएंगे।
तब तक... "एक विवेकपूर्ण बैंकर बनें और नुकसान से बचें।"

टीम एफआरएमडी और ईएफआरएमएस द्वारा संकलित

- भुगतान करने वाली शाखा को ग्राहक से मूल चेक एकत्र करना चाहिए और घटना से एक सप्ताह के भीतर आंचलिक कार्यालय और सर्विस शाखा (जहां चेक की वसूली की गई थी) के माध्यम से मुआवजे के दावे के लिए वसूलीकर्ता बैंक को प्रस्तुत करना चाहिए। वसूलीकर्ता बैंक को दावा दायर करने की तारीख से 7 दिनों के भीतर दावे को मंजूरी देनी होगी। कुल मिलाकर, 30 दिनों के भीतर दावा निपटान के सभी चरणों को किया जाना चाहिए।
- आरबीआई के अनुसार, विवाद समाधान तंत्र (पी.आर.डी) के तहत केवल वे चेक स्वीकार किए जाएंगे जो सीटीएस ग्रिड पर "पीपीएस" निर्देशों का अनुपालन करते हैं।
- मृत खाते से निकासी के मामले में अधिकारी को अत्यंत सावधानी बरतनी चाहिए और अतिरिक्त उपयुक्त जाँच पड़ताल करनी चाहिए।
- चेक की सुरक्षा विशेषताओं और स्पष्ट तत्व (अपरेंट टेनर) के अनुसार चेक/आहरण पर्ची का भुगतान सुनिश्चित करें।
- एंड-ऑफ़-डे रिपोर्ट की जांच प्रतिदिन सुनिश्चित की जानी चाहिए। ये रिपोर्ट विशेष रूप से लेखापरीक्षा ट्रेल्स और अपवादस्वरूप संव्यवहार रिपोर्ट्स हैं जिसमें जब भी मृत खातों या निष्क्रिय खातों में संव्यवहार होता है और इसी प्रकार अन्य असामान्य संव्यवहार सम्बन्धी अलर्ट जारी होते हैं, जिनमें शाखा द्वारा जांच की आवश्यकता होती है।
- चेक ड्रॉप बॉक्स और अन्य बुनियादी ढांचे (जैसे पासबुक कियोस्क, ग्राहक लाउंज इत्यादि) तथा विराम समय (ब्रेक टाइम) के दौरान बिना रखरखाव वाले काउंटरों की हमेशा उचित वॉचगार्ड और/या सीसीटीवी द्वारा सुरक्षा निगरानी करना अनिवार्य है।
- सभी स्टाफ सदस्यों के लिए प्राथमिकता के आधार पर ईएफआरएमएस अलर्ट में भाग लेना बाध्यकारी है जो एफआरएमडी टीम द्वारा आप से बंद करने के लिए भेजे जाते है।
- कार्यालय सम्बंधित खातों में परिचालन की निगरानी: किसी भी डेबिट प्रविष्टि को अधिकृत करते समय अधिकारी को संदेह से परे संतुष्ट होना चाहिए कि लेनदेन वास्तविक है। विशेषकर यदि क्रेडिट किसी कर्मचारी के खाते में है तब अतिरिक्त ड्यू डिलिजेंस से जांचना चाहिये।

अस्वीकरण खंड: इस सार-संग्रह को बैंकों में धोखाधड़ी के मामलों के विभिन्न तौर-तरीकों का हवाला देते हुए संकलित और तैयार किया गया है और ऐसे सभी परिदृश्यों को सुझावात्मक निवारक उपायों के साथ एक स्थान पर समेटा गया है। किसी भी विवाद/अस्पष्टता के मामले में, पाठक इस संबंध में बैंक के विस्तृत शाखा परिपत्रों और आरबीआई के मास्टर निर्देशों का संदर्भ ले सकते हैं।

76वाँ स्वतंत्रता दिवस - आज़ाद भारत

माना जाता था सोने की चिड़िया देश को,
बंदी बना लिया था फिर अंग्रेजों ने इसको,
ज़मीन हो, जान हो या हो इंसान, इस देश की हर चीज़ का हकदार बना लिया था खुद को,
न खाना, न रहना, न इज्ज़त, न कमाई, हर तरह से गरीब बना दिया था इसको।

फिर जब अंग्रेजों के अत्याचार की हदें बढ़ीं,
जब इस धरती माँ के सीने में जैसे आग हो लगी,
तब आज़ादी की लड़ाई की शुरुआत हुई, और न जाने कितने ही शहीदों की कुर्बानी हुई,
न परवाह की खुद की, न ही परिवार की, उन्होंने बस ठान ली थी इस देश को आज़ाद करवाने की।

रानी लक्ष्मी बाई, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु और चन्द्रशेखर आज़ाद जैसे अनगिनत शूरवीरों ने दिया बलिदान अपना,
महात्मा गांधी, तात्या टोपे और बाल गंगाधर तिलक आदि और भी कितनों ने मिलकर दिलाई आज़ादी हमको,
ऐसे जांबाज़ों के जज़्बे और हिम्मत का है नतीजा, कि फिर से ये धरती और ये आसमान है अपना,
हम सलाम करते हैं और करते रहेंगे उम्र भर उनको,

फिर समय की गति के साथ देशवासियों की मेहनत से विश्व में लहराया परचम हमारा,
शिक्षा हो या कृषि, उद्यमिता हो या निर्यात, विज्ञान हो या खेल, अर्थव्यवस्था हो या रक्षा क्षेत्र,
हर क्षेत्र में है, विश्व में है अब नाम हमारा।

सुलेखा
मानव संसाधन विभाग
आंचलिक कार्यालय
चंडीगढ़ अंचल

शुरू तो करें

बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें,
गलतियों से कतई न डरें,
हिन्दी में कार्य करना है आसान,
महोदय, आप शुरू तो करें ।
एक भाषा - एक ध्वज, हर देश की शान,
जैसा हर देश का अपना राष्ट्रगान,
बड़े कार्य की शुरूआत हमेशा छोटी,
आओ मिलकर बनाएं राजभाषा महान ।
क्षेत्रीय भाषाओं का उचित सम्मान,
इसीलिए तो उनका ऊपरी स्थान,
न तो कोई श्रेष्ठ, न ही कनिष्ठ
इन सब भाषाओं की है मीठी ज़ुबान ।
गृह मंत्रालय के आदेश सर्वोपरि,
इनके पालन में ही समझदारी,
राजभाषा विभाग तो है मार्गदर्शक
हिंदी में कार्य हम सब की ज़िम्मेदारी ?

आफ़ीन पिंजार
लिपिक
धारवाड़ शाखा
हुब्बल्ली-धारवाड़ अंचल

वो थे पापा !

जब मम्मी डांट रही थीं
तो कोई चुपके से हँसा रहा था,
वो थे पापा !
जब मैं सो रही थी तब कोई चुपके से
सिर पर हाथ फिरा रहा था,
वो थे पापा !
जब मैं सुबह उठी तो कोई बहुत थक कर भी
काम पर जा रहा था,
वो थे पापा !
खुद कड़ी धूप में रह कर
कोई मुझे एसी में सुला रहा था,
वो थे पापा !
सपने तो मेरे थे पर उन्हें पूरा करने का रास्ता
कोई और बताए जा रहा था,
वो थे पापा !
मैं तो सिर्फ अपनी खुशियों में हँसती हूँ
पर मेरी हँसी देख कोई अपने ग़म भुलाए जा रहा था,
वो थे पापा !
फल खाने की ज्यादा जरूरत तो उन्हें थीं,
पर कोई मुझे सेब खिलाए जा रहा था,
वो थे पापा !
खुश तो मुझे होना चाहिए कि वे मुझे मिले
पर मेरे जन्म की खुशी कोई और मनाए जा रहा था,
वो थे पापा !
ये दुनिया पैसों से चलती है
पर कोई सिर्फ मेरे लिए पैसे कमाए जा रहा था,
वो थे पापा !
घर में सब अपना प्यार दिखाते हैं
पर कोई बिना दिखाए भी इतना प्यार किए जा रहा था,
वो थे पापा !
पेड़ तो अपना फल खा नहीं सकते, इसलिए हमें देते हैं
पर कोई अपना पेट खाली रखकर भी मेरा पेट भरे जा रहा था,
वो थे पापा !
मैं तो नौकरी के लिए घर से बाहर जाने पर दुखी थी
पर मुझसे भी अधिक आंसू कोई और बहाए जा रहा था,
वो थे पापा !
मैं अपने "बेटी" शब्द को सार्थक बना सकी या नहीं, पता नहीं,
पर कोई बिना स्वार्थ के अपने "पिता" शब्द को सार्थक बनाए जा रहा था,
वो थे पापा !

आशीष शर्मा
अधिकारी
आंचलिक कार्यालय
रायपुर अंचल

खोया हुआ बचपन

आओ आज उस बचपन को फिर से याद करते हैं
फिर से हँसते और फिर से सजते सँवरते हैं।
वो सावन के झूले, वो झूलों पे सखियाँ
वो सखियों संग झूलना, वो गुड़ियों से खेलना
वो बारिश की मस्ती, वो पानी की कश्ती
वो चूड़ी की खन–खन, वो पायल की छन-छन
वो घेवर की खुशबू, वो सिवई की मिठास
वो राखी का बंधन, वो भाइयों का मनाना
वो खेल-खेल में गुड़ियों का घर बसाना
नम कर देता है इन आँखों को मेरी
यादें बनकर खेलता है मुझसे आँख मिचौली
न जाने अब वो गुड़िया कहा धूमिल हो गयी
और देखते ही देखते, मैं भी बड़ी हो गयी।

श्रीमती आयुषी
पत्नी श्री राम मोहन
प्रबंधक
वित्तीय समावेशन विभाग
कानपुर अंचल

प्रकृति का अनुरोध

कभी बारिश तो कभी सूखा
अगर अब भी नहीं संभलें तो प्रकृति देगी धोखा
मौसम चक्र अब बदल रहा
ठण्ड में गर्मी, और गर्मी में आग के गोले बरस रहे
कभी बाढ़ तो कभी सुखाड़
यही तो है प्रकृति का अत्याचार
प्रकृति तो कभी अत्याचारी नहीं रही
खुद को ही तो संतुलित करने के लिए तबाही ला रही
भू-जल स्रोत भी अब पानी की बाट जोह रहा
प्रकृति ने जिन्हें बनाया, वही उन्हें बर्बाद कर रहा
जनसंख्या विस्फोट सबसे बड़ा कारण होगा
रोज समाचार में ऐसा दिखाया जा रहा
परिवार दो से चार और चार से आठ हो रहा
पेड़ अनगिनत से गिनती की ओर आ रहा
बादल है आकाश में पर बरस नहीं रहा
वजह, पेड़ काटे जा रहे हैं, पहाड़ तोड़े जा रहे हैं
नई नईं इमारतें और मोटर कार
धीरे धीरे ही सही, पर कर रहीं प्रकृति का बंटाधार
ये सभी सिर्फ संकेत हैं
अब खुद को बदलना होगा
समय रहते हुए संभलना होगा
प्रकृति का विनम्र अनुरोध है सबसे
हमसे उतना ही लेना
जितना तुम्हें जरुरी हो
खुद की जिन्दगी तो जी ही रहे हो
अब आने वाली पीढ़ी के लिए भी छोड़ना होगा

सोमनाथ वर्मा
लिपिक
अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय
राँची अंचल

मेरी पहचान.....

नारी, महिला, औरत
यही पहचान है हमारी,
मैं हूँ माँ, मैं हूँ पत्नी,
कहा जाता है हमसे ही चलती है दुनिया सारी।
कहती है दुनिया
मैं सुन्दर हूँ,
मैं विश्वास हूँ,
हर टूटती हुई उम्मीद की मैं एक आस हूँ।
कहती है दुनिया
चरणों में मेरे जन्नत है,
आँचल में मेरे प्यार,
क्या यही वजह है कि हूँ मैं सबके सम्मान की हकदार?
नहीं पड़ता मुझे फ़र्क, कि कौन हूँ मैं?
किसी मैगजीन की मॉडल या गृहिणी हूँ मैं?
मैं हॉट लिस्ट में हूँ या नॉट लिस्ट में हूँ,
जीवन में सफल हूँ या हार गयी हूँ
लेकिन मैं खुश हूँ,
शायद
एक दायरे में बंधी सी रह गयी थी दुनिया मेरी,
आज आयी है जो हिम्मत, अब करुँगी नहीं बिलकुल भी देरी
उठाती हूँ आज ज़िम्मेदारी ढूँढने की उसे
खो दिया था अपनी जिम्मेदारियों में जिसे।
आज से निहारूंगी उसे,
आज से निखारूंगी उसे,
आज से दूंगी उसे आज़ादी का एहसास,
उठ खड़ी हूँ मैं, अपने अस्तित्व को सँभालने
क्योंकि सिर्फ आज नहीं, हर दिन हूँ मैं ख़ास।

मुस्कान आहुजा
माताश्री सुश्री अंकिता आहुजा
विपणन अधिकारी
आंचलिक कार्यालय
धनबाद अंचल

सुकून....

जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!
जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!!

तलाशता सुकून मैं मुझमें
तो मुझमें कुछ कमजोर, कायर विचार ही उभर आए
सुकून मैं औरों में ढूढूँ तो,
हिम्मत न थी किसी को, कि मुझे सुकून दें...

जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!
जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में...!!

वक्त की नजाकत तो देख
मंझर अब भी मैं समझ न सका
मेरे अपने भी अब बेगाने लगने लगे हैं
मैंने जिसे भी अपनाया, वो न सुकून दे सका मुझे...

जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!
जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में...!!

मैंने अपनों को चरमराते, सिमटते, टूटते देखा है
शायद वो मुझे देख चरमराया है, ये मैं समझ न सका,
अपनों को सिमटते देख, मैं सुकून कहां पाऊं
सुकून अब मिले न सही, मैं न चरमराऊं...

जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!
जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में...!!
मंझर मैं अब भी समझ न पाया
गलती मुझमें थी कि मेरे कर्मों में
मैं जिन-जिन में आज सुकून तलाशता
वो सुकून न दे, मजबूरी क्या है उनकी, मैं समझ न पाया...

जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!
जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में...!!

मंझर मैं अब भी समझ न पाया
कि मेरे ही सपने, टूटते क्यों बार-बार
मैं जिन-जिन सपनों में सुकून तलाशता
वो न सच्चे थे, न मेरे अपने थे
सपने भी अब पराये होने लगे हैं
यह मैं अब समझने लगा हूँ
मैं बस अब भी फिरता हूँ सुकून की तलाश में...

जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!
जिन्दगी, मैं निकला सुकून की तलाश में..!!

सुकून यहीं अपनों में है
अब मेरा दिल गुनगुनाने लगा है
दुनिया के रीति-रिवाज छोड़, मैं बंधन मुक्त हूँ
बंधनों में सुकून जकड़ा है, यह अहसास हुआ है
इन अहसासों ने अब मुझे सुकून दिया है
मैं अब फिरता, सुकून से
मैं अब फिरता, सुकून से....

श्री विमल कुमार जी
उप आंचलिक प्रबंधक (वसूली)
वडोदरा अंचल

आज की सामाजिक समस्या

आजादी के बीत गए हैं पचहत्तर वर्ष,
पर समाज में बुराइयों का नहीं हो रहा अंत।
आज भी भ्रष्टाचार ने देश को है खाया,
मासूम लोगों ने है केवल इससे धोखा पाया।
बड़ी भयंकर परेशानी है भुखमरी,
खाने के एक-एक दाने के लिए लोगों ने है इससे जंग लड़ी।
जिस उम्र में बच्चों को करनी थी पढ़ाई,
उस उम्र में उन्हें करनी पड़ रही है पेट के लिए कमाई।
बच्चियों को खेल-कूद से दूर कर दिया जाता है,
नन्हें हाथों में चिमटा-कढ़ची पकड़ा दिया जाता है।
सास-ससुर के रिश्तों से इस उम्र में ही परिचय हो जाता है,
अच्छी बहू बनने के लिए कच्ची उम्र में ही प्रयास कराया जाता है।
देश की बड़ी विकट समस्या है अशिक्षा,
रह जाए अनपढ़ तो चलाने पड़ते हैं रिक्शा।
पूरी जवानी बिता दी युवाओं ने एक डिग्री की खातिर,
थी उम्मीद, भविष्य होगा इसी कागज के भीतर।
पर इस डिग्री ने भी क्या खूब मज़ाक उड़ाया,
बिन नौकरी के हमें दर-दर भटकाया।
हुआ बेटा तो पूरे गाँव को खाना खिलाएँगे,
और बेटी पर पूरी दुनिया से चेहरा छुपाएंगे ?
बेटों पर ही क्यों करते हो इतना अभिमान ?
बेटियाँ भी दिलाती हैं समाज में सम्मान।
जातिवाद, छुआछूत का भेद किसने है फैलाया ?
भारतीय सभ्यता को धर्म, जातिवाद में है बिखराया।
आज भी दहेज की कुप्रथा चल रही है,
भारतवर्ष की बेटियाँ इस दर्द को सह रही हैं।
चलो दहेज की प्रथा को तोड़ते हैं,
समाज के इस रुख को मोड़ते हैं।
आजादी के इस अमृत महोत्सव में हम यह संकल्प उठाते हैं,
अपने देश के समाज को इन कुरीतियों और समस्याओं से बचाते हैं।

तन्वी कुमार
पुत्री श्री बिरेन्द्र कुमार,
मुख्य प्रबन्धक, सुरक्षा विभाग
प्रधान कार्यालय

बैंक ऑफ़ इंडिया के संयोजन में कार्यरत विभिन्न नराकास की छमाही बैठकों का आयोजन - सितंबर तिमाही 2022

खंडवा नराकास

मुजफ्फरपुर नराकास

दिनांक 14-15 सितंबर 2022 सूरत (गुजरात) में सम्पन्न हिन्दी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन में बैंक ऑफ़ इंडिया का स्टॉल लगाया गया। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह का स्वागत हमारे कार्यपालक निदेशक श्री स्वरूप दासगुप्ता ने किया और संकलित 'प्रेमचंद की जब्तशुदा कहानियाँ' पुस्तिका भेंट कीं।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2021-2022

दिनांक 14 व 15 सितंबर 2022 को सूरत (गुजरात) में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हिन्दी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हमारे रत्नागिरी अंचल के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) को वर्ष 2021-22 हेतु 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' श्रेणी में 'ख' क्षेत्र में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्रदान किया गया। माननीय केंद्रीय रेल राज्य मंत्री सुश्री दर्शना जरदोश से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए समिति अध्यक्ष एवं आंचलिक प्रबंधक, रत्नागिरी अंचल श्री संतोष सावंत देसाई ।

माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा एवं राज्य सभा के माननीय उप सभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह से प्रमाण-पत्र ग्रहण करते हुए समिति के सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) निरंजन कुमार सामरिया।

अंचलों को प्राप्त नराकास पुरस्कार वर्ष 2021-22

विशाखापट्टणम (प्रथम पुरस्कार)

भोपाल (प्रथम पुरस्कार)

चंडीगढ़ (द्वितीय पुरस्कार)

पटना (तृतीय पुरस्कार)

आगरा (तृतीय पुरस्कार)

हिंदी माह 2022

अमृतसर

अहमदाबाद

आगरा

हुब्बली धारवाड़

इंदौर

उज्जैन

एनबीजी (उत्तर प्रदेश)

एरणाकुलम

कानपुर

कोयंबटूर

कोलकाता

कोल्हापुर

तिरुअनंतपुरम

खंडवा

गांधीनगर

गाज़ियाबाद

गुवाहाटी

गोवा

चंडीगढ़

नवी मुंबई

चेन्नई

जबलपुर

पटना

जमशेदपुर

एमडीआई मुंबई

बर्धमान

जयपुर

जोधपुर

हजारीबाग

तेलंगाना

दिल्ली एनसीआर

देहरादून

धनबाद

धार

नई दिल्ली

नासिक

नागपुर

पुणे

रत्नागिरी

राँची

राजकोट

रायगढ़

बारासात

बारीपदा

बेंगलुरू

बोकारो

भागलपुर

भुवनेश्वर

भोपाल

मदुरै

मुंबई उत्तर

मुंबई दक्षिण

सोलापुर

मुजफ्फरपुर

हरदोई

हावड़ा

रायपुर

लखनऊ

लुधियाना

वड़ोदरा

वाराणसी

विजयवाड़ा

सिलीगुड़ी

सिवान

विदर्भ

संबलपुर

जयपुर अंचल में हिन्दी संगोष्ठी

जयपुर अंचल द्वारा 22.09.2022 को "राष्ट्र निर्माण एवं देश को एकता के सूत्र में पिरोने में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान" विषय पर आयोजित हिन्दी संगोष्ठी में अतिथि वक्ता तथा विख्यात गीतकार एवं साहित्यकार श्री इकराम राजस्थानी को सम्मानित करते हुए आंचलिक प्रबंधक श्री देशराज खटीक।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बैंक ऑफ़ इंडिया
(भारत सरकार का उपक्रम)
रिश्तों की जमापूँजी

Bank of India
(A Govt. of India Undertaking)
Relationship beyond banking

Azadi Ka Amrit Mahotsav

वाह!!!
खुशियों की सौगात

स्टार सुपर 777 डिपॉजिट

केवल 777 दिनों में

7.75%* तक प्रति वर्ष की ब्याज दर प्राप्त करें।

*नियम व शर्तें लागू

सीमित अवधि की पेशकश

जमा राशि- 2 करोड़ से कम

*वरिष्ठ नागरिकों के लिए तथा
दूसरों के लिए 7.25% प्रति वर्ष

1800 220 229 / 1800 103 1906 /22-4091 9191 पर कॉल करें या हमारी नजदीकी शाखा से संपर्क करें।

www.bankofindia.co.in को विजिट करें | पर फॉलों करें।